वर्ष-3, अंक-11, नवंबर 2019
जे.-7 श्रीरामनगर रायपुर छ.ग.
आर.एन.आई. पंजीयन क्रमांक
CHHHIN/2017/72506

किलोल

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा, शेख अजहरुद्दीन

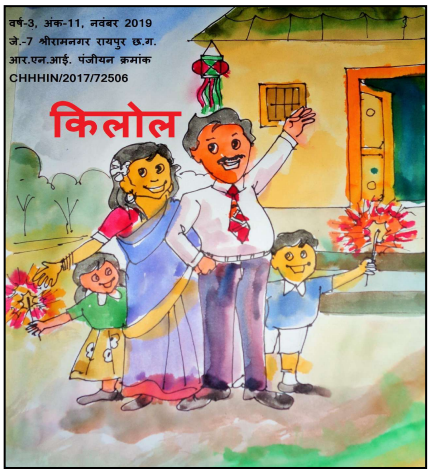

प्यारे बच्चों,

बच्चों का प्यारा दीवाली का त्योहार आया है. दीपक की लौ हमें हमेशा आगे बढ़ने और अपनी आशा को जागृत रखने की प्रेरणा देती है. मेरा सभी बच्चों को आशीर्वाद है कि आप सब उत्तरोत्तर प्रगति की राह पर बढ़ते रहें.

नवंबर के माह में हम सबके प्यारे चाचा नेहरू का जन्मदिन भी है. नेहरू जी भारत के प्रथम प्रधानमंत्री तो थे ही, वे बच्चों को बहुत प्यार करते भी थे. उनका जन्मदिन आज भी बाल-दिवस के रूप में मनाया जाता है. हमने हाल ही में देश के पूर्व राष्ट्रपति, भारत के मिज़ाइल मैन, डा. अब्दुल कलाम का जन्मदिन भी मनाया है. वे भी बच्चों से बहुत प्यार करते थे. वे जहां भी जाते थे, बच्चों के लिये अलग से समय निकाल कर उनसे बात अवश्य करते थे. आइये हम इन महापुरुषों से अपने जीवन के लिये सीख लें.

किलोल लिये कहानी, गीत, कविताएं, पहेलियां, चुटकुले आदि का हमेशा की तरह स्वागत है. किलोल http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है. सभी बच्चों को ढ़ेर सा प्यार.

आलोक शुक्ला

अनुक्रमणिका

जुगत 5

भाई दूज की कहानी 9

ज्ञान ने बचाई बल्लू की जान 12

किचन गार्डन 13

हमरो देवारी तिहार 16

कहानी पूरी करो 21

स्नो व्हाइट और सात बौने 21

संतोष कुमार कौशिक व्दारा पूरी की गयी कहानी 23

इंद्रभान सिंह कंवर व्दारा पूरी की गयी कहानी 24

हाथी और गौरैया 26

चित्र देखकर कहानी लिखो 28

प्रेम और त्याग 28

लक्ष्मी की सीख 30

O Chacha Nehru! 32

नंदा मैडम की कक्षा - 3 33

आओ स्कूल चलें 43

एक भारत श्रेष्ठ भारत 46

कब आओगे गांधी 48

कलाम कुंडलियाँ 50

कलाम को सलाम 52

किताबें 53

गाँधी शास्त्री का भारत 55

चींटी रानी 58

जाड़ा आया 59

छत्तीसगढ़ 60

दाई मय सिपाही बनहू 62
दिव्य गुण धारण करें हम 67
दीप जलायें 71
दीपमाला 73
दीवाली गीत 75
नशा छोड़ो 78
पढ़व आज (कज्जल छंद) 79
पावन लगता है 80
पौधे हैं अनमोल 82
मय नेहरू बन जातेंव 85
मिट्टी वाले दीये जलाना 89
मिट्ठू अउ मुसला 92
मैं नन्हा सा हिन्दुस्तान 95
यहू घलो नंदावत हावे 97
वृक्ष 100
शरद पुन्नी 103
हइय्या रे हइय्या 105
जादूगर 107
पहेलियां 109
नवाचार - पेपर बैग 111
नवाचार - बचत बैंक 112
नवाचार - लर्निंग छत 114
चुटकुले 116
विज्ञान के खेल - गैसों में प्रसार 117
भाखा जनउला 118

जुगत

लेखक - बलदाऊ राम साहू

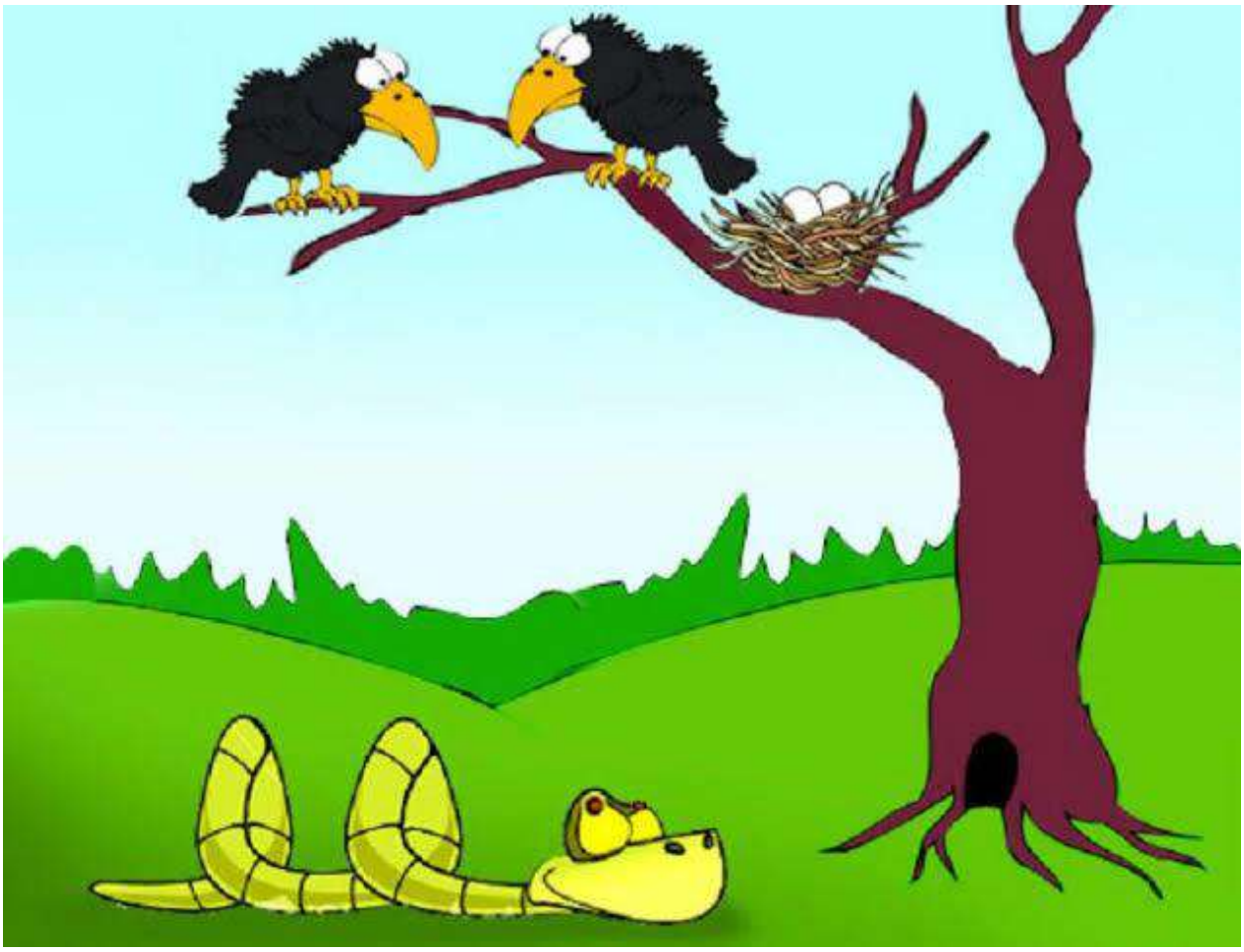

साँझ हो रही है, किन्तु रात अभी बाकी है. हमें समय रहते कार्य कर लेना चाहिए - बूढ़े कौए ने कहा. पर यह कैसे संभव है, दादा? एक कौए ने पूछा. अरे, सब संभव है. दुनिया में कुछ असंभव नहीं होता, सिर्फ लगन और मेहनत चाहिए. हम कब तक हाथ में हाथ धरे बैठे रहेंगे. तो हम क्या कर सकते है दादा? एक ओर कौए ने प्रश्न किया.

हम सब रोज-रोज कितनी पीड़ा सहते हैं. यह साँप आता है और हमारे अंडे खा जाता है. कभी-कभी तो वह हमारे नन्हे बच्चों को भी खा जाता है. तुम लोगों को कोई चिंता नहीं. कहते हो हम क्या कर सकते हैं. बूढ़े कौए ने ललकारते हुए अपनी बात जारी रखी - आज की रात हम सब के लिए चुनौती की रात है. सुबह होने से पहले हमें अपना काम पूरा कर लेना है. अब तुम सब जाओ और आस-पास से नुकीले काँटे ला कर उन्हें इस पूरे पेड़ पर ऐसे तरीके से लगाओ कि उस साँप को पता भी ना चले.

बूढ़े कौए की बात सभी को जँच गई. सभी कौओं ने उड़ान भरी और काँटे चुनने चले गए. एक के बाद एक कौए काँटे लाते गए और बूढ़े कौए के बताए अनुसार पेड़ की तनों और शाखाओं में कतारबध्द लगाते गए. अब तो इस काम में छोटे बच्चे भी मदद करने लगे. छोटे बच्चे आस-पास से नुकीले काँटे लाकर बूढ़े कौए को दे जाते थे. बूढ़ा कौआ उन्हे अपने अनुसार लगाता जाता था.

काम पूरा करते-करते रात बीतने वाली थी, परंतु कौओं की आँखों में नींद और शरीर में थकान कहाँ? सभी उत्साह से काम में लगे हुए थे. सुबह लगभग चार बजे कार्य पूरा हुआ. बूढ़ा कौआ सभी को एक जगह बुलाकर समझाने लगा.

देखो, आज हम सबने मिलकर एक बड़ा कार्य किया है. बड़े कार्य को इसी तरह मिलजुल कर किया जाता है. अब हम सभी अपने-अपने घोंसले में जाएँ और विश्राम करें. आज सुबह कोई नहीं चिल्लाएगा. आज कोई भोजन की तलाश में भी नहीं जाएगा. आज हम साँप के आने की प्रतीक्षा करेंगे.

सभी कौए अपने-अपने घोंसलों में जाकर आराम करने लगे. सुबह हो गई. सूर्य की गुनगुनी धूप आने लगी. सभी कौए साँप की आने की प्रतीक्षा करते हुए चुपचाप अपने घोंसले में बैठे गुनगुनी धूप का आनंद लेते रहे.

आज कौओं के चिल्लाने की आवाज नहीं आ रही थी. साँप असमंजस में था कि आज सारे कौए सुबह होने से पहले ही तो भोजन की तलाश में चले गए? मन में यही विचार करते हुए साँप अपने बिल से निकला और सीधे पेड़ की ओर बढ़ा. उसने पेड़ पर चढ़ने से पहले एक बार फिर से फन उठाकर इधर-उधर देखा कि कौए कहीं अपने घोंसले में तो नहीं है. वह जानता था कौए जब तक पेड़ पर रहेंगे, काँव-काँव चिल्लाते रहेंगे. परंतु कौओं की आवाज नहीं आने से वह आश्वस्त हो गया कि कौए भोजन की तालाश में चले गए होंगे.

यही सोचकर साँप धीरे-धीरे पेड़ की ओर बढ़ा और बिना आवाज किए पेड़ पर चढ़ने लगा. कुछ ही ऊपर पेड़ पर चढ़ने के बाद उसे कुछ चुभने लगा. फिर भी वह किसी तरह अपने को बचाते हुए चढ़ने का प्रयास करता रहा. जैसे-जैसे वह ऊपर चढ़ता गया वैसे-वैसे चुभन भी बढ़ती गयी. धीरे-धीरे उसका पूरा शरीर छिल कर लहुलुहान हो गया. अंत में वह अपने को हर तरफ से असमर्थ पाकर नीचे उतरने लगा लेकिन पेड़ के तने पर तो चारों तरह काँटे लगे थे. वह कहाँ तक बच पाता. उतरते समय भी उसे काँटे चुभ रहे थे. अंत में उसे छलाँग लगानी पड़ी.

काँटो से उसका पूरा शरीर बुरी तरह घायल हो गया था. उसमें चलने की भी शक्ति नहीं बची थी. कौए साँप को घायल अवस्था में देखकर एक साथ काँव-काँव चिल्लाने

लगे. अचानक कौओं की काँव-काँव की आवाज सुनकर साँप भयभीत हो गया और जल्दी से अपने बिल में जा बैठा. अब तो साँप को समझ आ गया कि यहाँ रहना खतरे से खाली नहीं है.

उस दिन के बाद साँप ने कभी भी पेड़ पर चढ़ने की कोशिश नहीं की. अब कौए खुश थे. अब न तो कोई उनके अंडों को क्षत-विक्षत करता और न ही उनके बच्चों को प्राण लेता. बूढे कौए की जुगत काम आई. सभी कौओं ने उस बूढ़े कौए के प्रति आभार जताया. बूढ़े कौए ने कहा - जब तक हम एक रहेंगे तब तक कोई हमें नुकसान नहीं पहुँचा सकता. यही तो एकता की ताकत है.

भाई दूज की कहानी

लेखिका एवं चित्र - प्रज्ञा सिंह

दीवाली के दो दिन के बाद भाई दूज का त्योहार आता है जिसमें भाई की लंबी उम्र की मंगल कामना की जाती है, हम बचपन से भाई दूज की कहानी सुनते आ रहे हैं जिसे मैं आज आप सब को सुना रही हूँ.

एक ब्राह्मण थे उनकी सात लड़कियां थीं. सब की शादी हो गई थी. सब अपने ससुराल में सुखी थीं. बड़ी बहन गरीब घर में गई थी. उनका एक भाई था उसका नाम था लैगुअर कुँअर. भाई की शादी होने वाली थी अतः वह बहनो को लेने गया.

सब बहनों को लाने के बाद फिर बड़ी बहन के घर गया. बड़ी बहन पहले से नहीं जा सकती थी तो बोली तुम जाओ मैं बाद में आऊंगी. भाई जाने वाला था तो सुबह से उठ कर बहन ने कनकी की रोटी बनाई और एक कपड़े मे बांध कर भाई को विदा की. उसके बाद देखती है की चकिया के पास सांप की पूंछ पड़ी थी. वो चावल के साथ पिस गया था, वह दौड़ते-दौड़ते गई कि कही भाई खा न ले. देखा कि भाई नदी में नहा रहा था. उसने रोटी उठा कर नदी में फेंक दी. भाई ने देखा किन्तु कुछ नहीं बोला. बहन घर वापस आ रही थी तो उसको प्यास लगी. उसने देखा एक लोहार के घर कुछ लोग काम कर रहे हैं. वह वहीं चली गई और बोली प्यास लगी है. वे लोग बोले कुंए से पानी निकाल लो. वह पानी भर रही थी तब उसने उन लोगों की बातें सुनी. वह लोग कह रहे थे कि एक काल तो टला. उसने पूछा कैसा काल? उन लोगों ने बताया उसी के भाई का काल! उन लोगों ने सात काल बतलाये. वह लोग बोले, अगर बहन उपाय कर सकती हो भाई बच जायेगा. एक काल तो काट चुकी बाकी. छः काल बचे हैं. उपाय पूछ कर वह सीधे घर गई और एक झोला लेकर पहुंच गई मायके. मायके आकर उसने कहा जो भी नेग दस्तूर होता वह मैं आगे करूंगी. सब लोग बोले यह पागल हो गई है लेकिन उसने किसी का बुरा नहीं माना. उसको तो भाई की जान बचानी थी. वह कहती रही कि मंडप में आगे मैं जाऊँगी. सब चुप रहे. फेरा में करूंगी, जामा में पहनूंगी, बारात में दूल्हा में बनूंगी, ऐसा करते-करते पूरी शादी निपट गई. फिर सब की बिदाई का समय आया सब को अच्छी-अच्छी बिदाई दी गई. इसको खादी की साड़ी दी गई. उसने प्रेम से साड़ी रखी और सब को एक दिन रुकने के लिये बोली. सब रुक गए तब उसने अपना झोला खोला और पूरी बात बतलाई. अब सब उसकी तारीफ़ करने लगे. वह बोली तारीफ़ की जरूरत नहीं है. इतने में यमराज आ गए और बोले बहन तुम मुझे भाई बनाओगी मेरी कोई बहन नहीं है. बहन नाम जमुना था. वह भाई दूज का दिन था. वह हाथ न्योति खाना खिलाई.

यमराज ने भाई बहन को बहुत आशीर्वाद दिए और बोले जो भाई दूज के दिन बहन से हाथ नेवतायेगा उसकी उम्र बढ़ेगी.

भाई दूज का मंत्र भी है जिसे भाई का हाथ न्यौते के समय बोला जाता है. साथ ही गोबर से भाई और उसकी सात बहनों की मूर्ति बना कर पूजा की जाती है. भाई को टीका कर उसकी लंबी उम्र की मंगल कामना की जाती है. भाई दूज का मंत्र है -

"जैसे जमुना जम को नेवते, बहन भाई को नेवते,

जैसे गंगा जमुना जल बाढ़े वैसे भाई की आयु बाढ़े"

ज्ञान ने बचाई बल्लू की जान

लेखक - ढ़ालेन्द्र साहू

एक बार की बात है बल्लू नाम का लड़का जंगल के रास्ते से स्कूल से अपने घर जा है रहा था. उसके सारे दोस्त उससे पहले घर चले गए थे मगर बल्लू को उस दिन देर हो गयी थ. इसलिए उसे अकेले घर जाना पड़ रहा था. रास्ते मे चलते हुए बल्लू को अचानक एक भालू दूर से अपनी ओर आते हुए दिखाई दिया. बल्लू डर के मारे कांपने लगा और इधर उधर छुपने की जगह खोजने लगा. वह एक पेड़ के खोल में जाकर छुप गया. भालू और नजदीक आ गया था. तभी बल्लू को उसकी माँ की बताई एक कहानी याद आयी जिसमे माँ ने बताया था कि भालू मुर्दा जीव को नही खाते. बल्लू ने फट से तरकीब लगाई और जैसे ही भालू उसके पास पहुँचा बल्लू अपनी सांस को कुछ पल के लिए रोक कर लेट गया. भालू उसे सूंघकर मुर्दा समझा और आगे बढ़ गया और बल्लू की जान बच गयी. उसके बाद बल्लू अपने घर चला गया और माँ को पूरी कहानी बतायी. माँ ने उसे शाबाशी भी दी और जंगल के रास्ते कभी अकेले नही आने जाने की बात भी सिखाई.

किचन गार्डन

लेखक एवं चित्र - त्रिलोकी नाथ ताम्रकार

शाम को स्कूल से घर के दरवाजे पर पहुंचते ही मोनू ने आवाज़ लगाई - मम्मा.... मम्मा.. कहां हो?

मैं यहां हूं मोनू - मां चावल साफ करते हुए बोली.

मोनू स्कूल बैग को रखकर मां की गोद में बैठ कर मां के चेहरे को अपनी और करते हुए बोली - मां आज हमारे स्कूल में पालक की सब्जी बनी थी.

मां ने कहा - लेकिन तुम्हें तो भाजी साग पसंद नहीं है.

मां पालक में आयरन - सबसे ज्यादा होता है. आप तो कुछ नहीं जानती! - मोनू ने मुंह बिसूरकर कहा.

मां ने कहा - अच्छा, और फिर काम में लग गई.

मोनू - और जानती हो मां यह पालक हमारे स्कूल के खेत की है.

मां - स्कूल के खेत की?

हां मां - मोनू बोली - हमारे स्कूल में किचन गार्डन है जहां मैं और मेरी सहेलियों ने पालक लगाया था. उसी की सब्जी है. जानती हो मां, हमने स्कूल के किचन गार्डन में सब प्रकार की सब्जियां लगाई हैं - टोमेटो (टमाटर), लेडी फिंगर - अरे.. भिंडी, करेला, लौकी, धनिया - ऐसी सब सब्जी लगाई हैं. हमारे गुरु जी बताते हैं कि गोबर की खाद सबसे अच्छी होती है. हमने क्यारी में गोबर की खाद डाली थी.

मां बोली - अच्छा मेरी बेटी तो आज बहुत अच्छी बातें बता रही है.

अच्छा मैं खेलने जा रही हूं - मोनू बोली.

अरे रुको तो.. मां ने कहा. जा.. किचन गार्डन से भटा तोड़ कर ले आ शाम की सब्जी बनानी है.

मोनू - ओहो मां किचन गार्डन की सब्जी स्कूल के लिए है हमारे घर के लिए नहीं.

मां -अरे.. बारी (बाड़ी) से बेटू.

तो ऐसे बोलो न मम्मा. टोकरी लेकर मोनू बोली - चलो न मां दोनों चलते हैं.

मां -अच्छा चलो.

दोनों घर से लगी बारी में जाते हैं. भटा तोड़ते हुए मोनू बोली- मां, बारी में हमारे स्कूल के किचन गार्डन की तरह सब्जियां लगी हैं.

मां बोली - हां मोनू ये मिर्ची, जीमिकांदा, कोचई, तोरई, और यह तुम्हारा लेडीफिंगर. उधर छानही में कोंहडा(कुम्हड़ा) - तुमा(लौकी) और..

मोनू - हां मां टोमेटो और धनिया भी है इसे तो किचन गार्डन कह सकते हैं. सब्जी तोड़कर वापस आते हुए मोनू बोली - मेरी मम्मा सब जानती हैं. कल स्कूल में सबको बताऊंगी कि हमारे घर में भी किचन गार्डन है.

और मोनू खेलने चली गई. मां मुस्कुराती हुई मोनू को देखने लगी.

<u>हमरो देवारी तिहार</u>

लेखक - योगेश ध्रुव भीम

माटी के दिया बगराथस,तय घलो अंजोर न |
आय हावे देवारी तिहार,पहुना कस बनके ||

घर म अवैय्या सबो सगा के मानगोन हमन बड़ सेवा भाव ले घलो करथन. अउ जब हमर घर म अवैय्या सगा दाई देवी लक्छमी के स्वागत म कइसन कमी ल घलो कर सकबोंन? हमर हिन्दू रीति रिबाज ले देवारी तिहार के सुभ दिन घलो दाई लक्छमी

हा हमरो घर आथे. अउ हमन ल धन धान्य ले सदा भरे रहाय के आसीस ल देथे.दाई लक्छमी के आय के खुसी म हमन अपन घर कुरिया ल अड़बड़ सुघ्घर ढंग ले सजाथन घलो अउ मनोती करथन की दाई लक्छमी के आसीस हर बेरा बने रहाय. हमर सबो भारतीय तिहार के भाव ह घलो एकेच आय. परेम अउ खुसिया के अदला-बदली हरे. भले एखर मनाइय्या के तरीका मन अन्नते-अन्नते रथे घलो. देवारी ह घलो सबले बड़का तिहार हरे जेन ल पूरा परिवार मन मिल जुल के एके संग ले मनाय जाथे. हमर अपन परिवार के सदस्य जेन ह दुरिहिया रहिथे ओहर घर म आथे अउ संघरा एक साथ बईठ के प्यार ल बाँटत तिहार ल मनाथे ओखर प्यार ह दुरिहिया ले खीच घलो लाथे. अउ घर म मेला मड़ई कस लागे लगथे. पूरा परिवार ह खुसी ल बांटत खुसी के अनुभव ल करथे घलो. चारो डहर फटका फोडट आतिसबाजी करत मन बइठे बैर ल भुलावत परेम से दिया जलाय घलो जाथे अउ सदियों ले ये तिहार ल पांच दिन ले मनाय जाय के परम्परा घलो हावे.

पहली दिन तेरस - देवारी तिहार के एक ठन पहली कड़ी आय. देवारी के दु दिन पहली तेरस के दिन ल धनतेरस कहे जाथे. ये दिन आयुर्वेद के देवता धन्वन्तरि पूजा करे के अबड महत्व हावे घलो.

रोग राई ले घलो, हमला तय बने बचाबे
अरज करत धनमंत्री, आयुर्वेद के गुन बताबे
नवा जिनिस बिसात
तेरस दिया जलाबोन

यहु दिन लोगन मन नवा नवा बर्तन सोना चाँदी के खरीदई ल करथे घलो. ये दिन धन्वन्तरि के पूजा करत भगवान ल पूरा परिवार ल रोगराई ले बचाय के आसीस ल मांगें जाथे.नवा नवा जिनिस ल बिसा के घर व्दार चलाय के सिख ल लईका मन ल देथे घलो. अउ इसने तेरस ल बढ़िया ढंग ले खुसी-खुसी ले मनाय जाथे.

दूसर दिन चौदस - धनतेरस के दूसर दिन ले चौदस आथे. जेन ल रूप चौदस.

बिहनिया ले नहा के, सूरुज ल चढ़ाबोंन पानी
चौदह ठन दिया जलाबोन, अमराज़ ल मानके

नरक चौदस घलो कथे. ये दिन बड़े बिहनिया पहट ले उठ के नहाय के बाद म सूरुज भगवान ल जल चढ़ाय के अबड़ महत हावे.ये दिन अपन देह ल सुघ्घर बनाय के आसीस मांगे जाथे. अउ साम के देराउठि म यमराज के नाव लेके चौदह ठन दिया जलाय जाथे अउ बने-बने रखे के आसीस ल मांगत अपन मन के बैर भाव ल दूर करत परेम ले रहाय के भाव मन म लाय घलो जाय के परम्परा हावे.

तीसर दिन सुरहोती - कातिक महीना के अमावस्या के अंधियारी रात म सबो डहर रिकबिक रिकबिक दिया ल जलावत देवारी घलो मनाय जाथे. यहू दिन माता देवी लक्छमी, सरसती, गनेस देवता के पूजा ल करत बने-बने राखे के आसीस ल मांगे जाथे.अउ अंधियारी रात म माटी के दिया जलाके अंजोरी करय के परम्परा घलो आय.

माटी के दिया ल, जलाबोन
अंजोरी ल घलो बगराबोन
लक्छमी के, चरन पखारत
आसीस ल मांगबोन घलो

जइसन हमन अंधियारी रात म माटी के दिया ल जलावत अंजोरी ल बगराथन उइसने हमर मन ल घलो सुघ्घर बनावत परेम के दिया ल सदा सदा ले जलावत रहिबोंन इहि सन्देस ल देवारी ह सबो झन ल देथे.

चौथा दिन गोबरधन पूजा - सुरहोती के दूसर दिन किसान भाई मन अपन गोधन ल सुघ्घर ले नहवाके पूजा ल करत गोबरधन खुन्दावत खिचड़ी खवाथे अउ रउत मन ह सोहाई ल बांधते घलो जेन ल अन्नकूट कहे जाथे अउ रउत मन आसीस देवत दोहा ल पारथे घलो.

कोलकी कोलकी बईला चराय
अउ बईला के सींग म माटी रे
ठाकुर घर जोहारे ल गेव संगी
फुटहा हड़िया म बासी रे

ये दिन घलो कहय जाथे भगवान सिरी किसन ह लोगन अउ गोबंस के रक्छा खातिर गोबरधन परबत ल अपन छीनी अंगूरी म उठाय रिहिस अउ सबो झन के रक्छा ल करे रिहिस. ये तिहार ह हमन सबो झन ल परेम अउ भाईचारा ले रहे के सन्देस देवत सबो परानी ले मिल जुल के रहाय ल सिखाथे घलो.

अरसी फूले घमा घम भईय्या
मूनगा ह फूले सफेद रे
चार हाथ के कौड़ी बधेव
होंगे जवानी म भेंट रे

पांचवा दिन भाई दूज - तिहार के आखरी बेरा के रूप म आखरी तिहार भाई दूज ह घलो आथे. ये तिहार ह हमर भाई बहिनी के परेम ल बतावत हमन ल हसी खुसी ले रहाय के सन्देस ल देथे. जइसन राखी के तिहार ल मनाथन अउ भाई ह अपन बहिनी ल अपन घर म बलाथे उइसने ये तिहार म बहिनी ह अपन भाई ल अपन घर बलाथे.

भाई बहिनी के परेम ह बने रहाय
भाई संग म बहिनी के रिसता न
भाई दूज ह सन्देस ल घलो देवत हावे

काबर की भाई बहिनी के परेम ह बचपना के परेम आय जेन ह हमला एकेच धागा म बाँधत ये रिसता ल अउ मजबूती देवत हमला लम्बा उमर ल घलो जिये के आसीस ल देथे.अउ आपसी भाईचारा मेल मेलाप करत एके संघरा ले रहाय के सन्देस देवत ये सबो तिहार ह आखरी बेरा होथे.

मोर देवारी के तिहार घलो
आय तय रिकबिक करत
देवत सन्देस संघरा रहय के
परेम के दिया जलाबोन घलो

कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिए दी थी -

स्नो व्हाइट और सात बौने

यह बेहद पुरानी बात है, एक राज्य की रानी सर्दियों के समय खिड़की के पास बैठकर कुछ सिल रही थी. अचानक सुई उसकी उंगली में चुभ गई और रानी के रक्त का क़तरा पास की बर्फ पर जा गिरा. इस घटना को देख रानी के मन में एक ख़्याल आया कि काश मेरी एक बेटी होती, जिसका रंग इस बर्फ की तरह की तरह ही सफेद होता, उसका होंठ रक्त के क़तरे से भी लाल होते और बाल काली घटाओं से.

कुछ समय बाद ही रानी को बेटी हुई और वो ठीक वैसी ही थी, जैसी उन्होंने कल्पना की थी, इसलिए उसका नाम रखा गया स्नो व्हाइट. कुझ समय बाद रानी की मृत्यु हो गया और समय बीतने के बाद राजा ने दूसरी शादी कर ली. वो नई रानी भी बेइंतेहा ख़ूबसूरत थी. रानी के पास एक जादुई आईना था, जिससे वो वो रोज़ पूछती कि बता इस दुनिया में सबसे सुंदर कौन है? चूंकि वो आईना कभी झूठ नहीं बोलता था, तो वो हमेशा कहता- आप ही सबसे सुंदर हो रानी. यह सुन रानी ख़ुद भी इतराती.

समय बीतने के साथ-साथ स्नो व्हाइट की ख़ूबसूरती और भी निखरती गई और एक दिन ऐसा आया, जब जादुई आईने ने रानी की बजाय जवाब दिया- जग में सबसे सुंदर है- स्नो व्हाइट! यह सुन रानी को सदमा लगा और वो स्नो व्हाइट से जलने लगीं. रानी ने अपने सबसे ख़ास और क़रीबी सिपाही को बुलाकर आदेश दिया कि स्नो व्हाइट को दूर जंगल में ले जाकर मार डालो.
सिपाही स्नो वहाइट को ले तो गया, पर उसे मार नहीं पाया. मासूम स्नो व्हाइट पर उसको दया आ गई और उसने स्नो व्हाइट को रानी की असलियत बताकर उससे दूर रहने को कहा. स्नो व्हाइट को जंगल में ज़िंदा ही छोड़कर जाते समय सिपाही एक जंगली जानवर का दिल ले गया सबूत के तौर पर.

स्नो व्हाइट यहां-वहां भटकती रही कि तभी उसकी नज़र एक छोटे-से घर पर पड़ी. वो घर एकदम बच्चों के घर जैसा था. वो घर था सात बौनों का.

हमे बहुत से लागों ने यह कहानी पूरी करके भेजी है. उनमें से कुछ हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

संतोष कुमार कौशिक व्दारा पूरी की गयी कहानी

स्नो व्हाइट ने देखा बौनो के घर में खाना, बिस्कुट और रोटी भी है. इतने छोटे-छोटे बर्तन, कुर्सी, बेड और अन्य चीजें उसको आकर्षित कर रही थीं. स्नो व्हाइट कुछ बिस्कुट और रोटी खा कर सो गई. जब बौने घर लौटे तो सब समान इधर-उधर देखकर सोच में पड़ गए. शयनकक्ष में उसकी नजर स्नो व्हाइट पर पड़ी. वह जाग गई और बौनो को देखकर डर गई. उसने बौनो को अपनी बीती हुई पूरी कहानी सुनाई. बौनो को दया आ गई और उन्होने स्नो व्हाइट को अपने साथ रख लिया. वह घर का सारा काम करती और बौने जंगल में जाकर खाने का इंतजाम करते. बौने विभिन्न प्रकार की कलाएं जानते थे. उन्होने स्नो व्हाइट को आत्मरक्षा के लिए अस्त्र-शस्त्र चलाना सिखाया एवं विभिन्न कलाएं भी सिखाईं.

इस बीच रानी ने फिर से अपने आईने से पूछा कि कौन सबसे सुंदर है. आईने ने कहा आप बेशक बहुत सुंदर हैं लेकिन आपसे भी सुंदर है - पहाड़ों के उस पार सात बौनो के साथ रहने वाली स्नो वाइट. यह सुनकर रानी गुस्से में आग बबूला हो गई. उसने कहा- "किंतु वह तो मर चुकी है." आईना बोला नहीं, वह अभी तक जीवित है. रानी समझ गई कि मेरे सैनिकों ने मुझे धोखा दे दिया. अब मैं स्वयं सैनिको के साथ जाकर उसे मार दूंगी. इस तरह राज्य के पूरे सैनिकों के साथ अस्त्र-शस्त्र लेकर वह स्नो व्हाइट को मारने के लिए निकल पड़ी. इसकी जानकारी राजा को नहीं थी.

रानी एवं उसके सैनिकों ने बौनो के घर को चारों तरफ से घेर लिया. संयोग से सभी बौने वहीं उपस्थित थे. विभिन्न प्रकार की कलाओं का प्रयोग करते हुए स्नो व्हाइट एवं बौनो ने सभी सैनिको को मार गिराया व रानी को बंधक बना लिया.

बौने स्नो व्हाइट को उसका अधिकार दिलाने हेतु उसे तथा रानी को ले लेकर राजा के पास गये. स्नो व्हाइट ने अपनी सौतेली मां के बारे में पिताजी को पूरी जानकारी

दी. पिताजी ने रानी के किए हुए कार्यों पर क्रोधित होकर मारने के लिए तलवार निकाल ली. जैसे ही राजा ने रानी को मारने के लिए तलवार निकाली वैसे ही स्नो वाइट ने अपने पिताजी का हाथ पकड़कर मां को क्षमा करने की बात कही. बेटी की समझदारी को देखकर राजा की आंखों में आंसू भर आए. सौतेली मां भी अपने किए पर शर्मिंदा हुई. उसने स्नो व्हाइट से क्षमा मांगी. स्नो ने व्हाइट अपनी सौतेली मां को क्षमा कर दिया. राजा, रानी और स्नोव्हाइट व्हाइट खुशी-खुशी सथ में रहने लगे.

शिक्षा - ईर्ष्या और षड्यंत्र करने वाले खुद अपने ही आग में जल जाते हैं. एक न एक दिन उन्हें अपने किए की सजा मिलती है. इसलिए मन में किसी के लिए भी जलन मत रखो और षड्यंत्र से दूर रहो.

इंद्रभान सिंह कंवर व्दारा पूरी की गयी कहानी

वह घर के अंदर प्रवेश करती है जहां कुछ खाने का सामान पड़ा रहता है. वह भूख के कारण इंतजार नहीं कर पाती और खाने के सभी समान को खा जाती है. खाने के बाद उसे नींद आ जाती है और वह वहीं पर लेट जाती है. थोड़ी देर बाद सभी बौने अपने घर के अंदर आते हैं और देखते हैं कि सभी सामान इधर-उधर बिखरा पड़ा रहता है और एक बहुत ही सुंदर लड़की उनके बिस्तर पर आराम कर रही होती है. उसकी सुंदरता देखकर वे उसे मंत्रमुग्ध होकर देखते रहते हैं और उसके उठने का इंतजार करते हैं. जब वह नींद से उठती है तो एक बौना उसका परिचय पूछता है और आने का कारण भी. तब वह रोते हुए अपना परिचय देती है और वहां तक पहुंचने का कारण बताती है. सातो बौने कारण जानकर बहुत ही दुखी होते हैं.

उसके बाद वह भी बौनों से पूछती है कि आप सभी यहां जंगल में क्यों रहते हैं. तब वे भी अपने जंगल में रहने का कारण बताते हैं कि जिस तरह आपको आपकी मां ने यहां पहुंचाया है, उसी तरह मानव समाज ने हमारे बौनेपन का उपहास कर हमें यहां तक पहुंचाया है. सभी लोग हमारे बौने होने का मजाक उड़ाते थे, जिससे परेशान होकर हम सब यहां शांत वातावरण में जीवन व्यतीत कर रहे हैं. स्नो व्हाइट भी उन लोगों के बारे में जानकार बहुत दुख व्यक्त करती है. एक दूसरे के बारे में जानने के बाद वह सब एक साथ रहने का फैसला करते हैं.

सभी लोग साथ-साथ खुशी से जीवन व्यतीत करते हैं. एक दिन राजा शिकार के लिए जंगल गए हुए रहते हैं, और शिकार का पीछा करते हुए दल से अलग हो जाते हैं. तभी एक जंगली जानवर उन पर हमला कर देता है, जिससे राजा चिल्लाते हुए मूर्छित हो जाते हैं. उनके चिल्लाने की आवाज वहीं पास में लकडी काट रहे उन बौनों के कानों तक पहुंचती है. वह राजा को जानवर से बचाकर मूर्छित अवस्था में अपने घर लेकर आते हैं. स्नो व्हाइट उस समय फल तोड़ने के लिए जंगल गई हुई रहती है. बौने, राजा के घाव पर मरहम-दवाई लगाते हैं. कुछ देर बाद राजा को होश आता है. तब वे देखते हैं कि सात बौने उनकी चारपाई के पास खड़े हैं, जो टकटकी लगाकर राजा को देख रहे होते हैं. राजा उन सभी को धन्यवाद देते हैं, साथ ही उनका परिचय भी पूछते हैं. तब बौने अपने बारे में बताते हैं और साथ यह भी बताते हैं कि उनके साथ एक लड़की भी रहती है. हम सब यहां एक परिवार की तरह रहते हैं.

कुछ देर बाद स्नो व्हाइट घर पहुंचती है. राजा देखते ही उसे पहचान जाते हैं, और फिर दोनों पिता पुत्री एक दूसरे से गले मिलकर रोने लगते हैं. राजा को स्नो व्हाइट

के यहां होने और सात बौनों के जंगल में रहने का कारण पता चलता है, जिससे वह काफी दुखी व क्रोधित होते हैं.

उसके बाद राजा उन सभी को लेकर राजमहल आ जाते हैं और तत्काल राजदरबार की बैठक बुलाते हैं, जहां उन सभी को प्रस्तुत किया जाता है. साथ ही रानी को भी वहां बुलाया जाता है. रानी स्नो व्हाइट को देखकर डर जाती है. राजा व्दारा रानी की करतूतों को राज दरबार में बताया जाता है और फिर सजा सुनाई जाती है. साथ ही समाज व्दारा सात बौनों के साथ हुए भेदभाव के बारे में भी बताया जाता है और उनके महान कार्यों का वर्णन करते हुए निर्णय लिया जाता है कि आज से इस राज्य में किसी प्रकार के दिव्यांग जनों से बुरा व्यवहार नहीं किया जाएगा. सभी को बराबर का अधिकार व सम्मान प्राप्त होगा. इसे सुनकर वे सभी बौने खुशी से उछल पड़ते हैं.

सीख- अच्छे कर्मों का फल हमेशा अच्छा ही होता है. भले वह फल देर से ही क्यों न प्राप्त हो.

अगले अंक के लिये अधूरी कहानी -

हाथी और गौरैया

किसी पेड़ पर एक गौरैया अपने पति के साथ रहती थी. वह अपने घोंसले में अंडों से चूजों के निकलने का बेसब्री से इंतज़ार कर रही थी.
एक दिन की बात है गौरैया अपने अंडों को से रही थी और उसका पति भी रोज की तरह खाने के इन्तेजाम के लिए बाहर गया हुआ था.

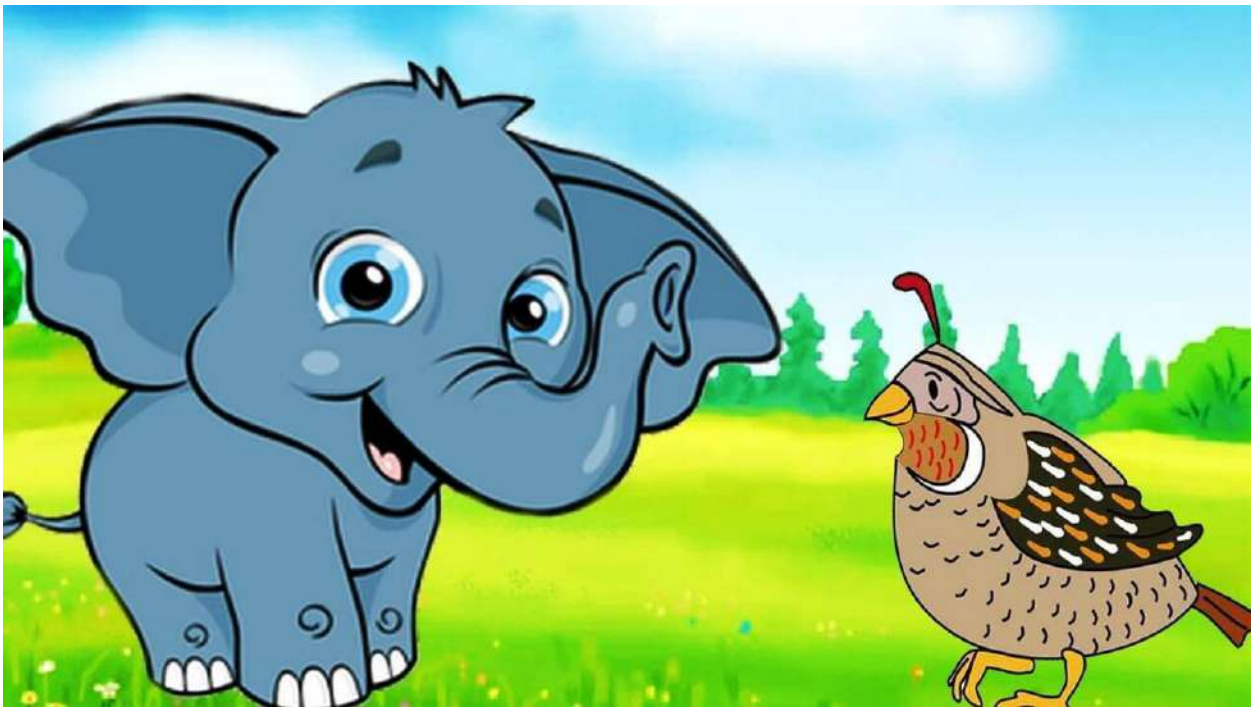

तभी वहां एक गुस्सैल हाथी आया और आस-पास के पेड़ पौधों को रौंदते हुए तोड़-फोड़ करने लगा. उसी तोड़ फोड़ के दौरान वह गौरैया के पेड़ तक भी पहुंचा और उसने पेड़ को गिराने के लिए उसे जोर-जोर से हिलाया. पेड़ काफी मजबूत था इसलिए हाथी पेड़ को तो नहीं तोड़ पाया और वहां से चला गया, लेकिन उसके हिलाने से गौरैया का घोसला टूटकर नीचे आ गिरा और उसके सारे अंडे फूट गए. गौरैया बहुत दुखी हुयी और जोर जोर से रोने लगी. तभी उसका पति भी वापस आ गया. वह भी बेचारा बहुत दुखी हुआ और उन्होंने हाथी से बदला लेने और उसे सबक सिखाने का फैसला किया. वे अपने मित्र कठफोड़वा के पास पहुंचे और उसे सारी बात बताई.

अब इस अधूरी कहानी को जल्दी से पूरा करके हमें भेज दो. कहानी भेजने का ई-मेल है - dr.alokshukla@gmail.com. कहानी तुम वाट्सएप से 7000727568 पर भी भेज सकते हो. सभी अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

इस चित्र पर हमें कई मज़ेदार कहानियां मिली हैं, जिन्हें हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

प्रेम और त्याग

लेखक - संतोष कुमार कौशिक

रामू नाम का एक गड़रिया था. उसका संयुक्त परिवार था. वह अपने परिवार एवं गाय, भेड़, बकरी, ऊंट के साथ गांव-गांव जाता था. जहां भी सूरज ढ़लता, वहीं वह अपने

परिवार के साथ रुक जाता और वहीं पर भोजन व विश्राम करता. रामू हमेशा अपने परिवार वालों को मिलजुल कर कार्य करने की प्रेरणा देता था.

एक दिन शाम को रामू काम करके घर वापस आया है तो उसने देखा कि उसके परिवार के सभी लोग मिल जुलकर भोजन बनाने, पानी भरने, पशुओं की देखभाल करने आदि का काम साथ मिलकर कर रहे हैं. गाय बकरी कुत्ता आदि जानवर भी घर के सदस्य की तरह उसके पास आराम से बैठे थे. घर की एक महिला ने कुछ भोजन एवं फल गाय को खाने के लिए दिया. गाय ने सोचा कि मेरे साथी कुत्ता, बकरी, ऊंट हैं. उन्हें भेजन नहीं मिला. मैं अकेली कैसे खाऊंगी. यह सोचकर गाय थोड़ा सा खकर बाकी भोजन बकरी को दे दिया. बकरी भी सोच में पड़ गयी. उसने सोचा कि अगर गाय चाहती तो सभी भोजन खा जाती लेकिन उसने मुझे दे दिया. मेरे पास कुत्ता बैठा हुआ है. मैं उसे थोड़ा सा भोजन दे देती हूं. यह सोचकर कुछ थोड़ा सा स्वयं खाकर शेष भोजन उसने कुत्ते को दे दिया. कुत्ते ने भी उसका अनुकरण करते हुए कुछ भोजन खाकर शेष भोजन ऊंट को दे दिया. यह सब देखकर रामू की आंखें नम हो गयीं. उसने सोचा कि जेसा प्रेम और त्याग इन पशुओं में है वैसा तो मानव जाति में भी नहीं है. रामू ने अपनी पत्नी को बुलाकर सारी बात बताई और कहा -

मुखिया मुख सो चाहिए, खानपान को एक

पालय पोसय सकल अंग, तुलसी सहित विवेक

अर्थात् मुखिया को मुख के समान होना चाहिए. जिस प्रकार से मुख भोजन करने के पश्चात जिस अंग को जितनी जरूरत पड़ती है उतना उस अंग को देकर सभी का पोषण करता है, उसी प्रकार हमें भी ऐसा ही करना चाहिये. ये पशु हमारे परिवार की तरह ही हैं. जब भी हम लोगों के लिए भोजन बनाओ तो इनके लिए भी साथ में

भोजन बना दिया करो ताकि हम सब एक साथ मिलकर भोजन कर सकें. उस दिन से रामू की पत्नी सभी के लिए भोजन बनाती है और पूरा परिवार पशुओं को पहले भोजन देकर साथ में बैठकर खुशी से भोजन करता है.

लक्ष्मी की सीख

लेखक - इंद्रभान सिंह कंवर

ठंडी का दिन था. अम्मा जी और बड़ी बहू उस दिन सुबह से ही घर के बाहर चूल्हा जलाकर बातें करते हुए रोटियां सेक रहीं हैं. बगल में ही उनका पालतू कुत्ता - शेरू, प्यारा मेमना और धेनुकी गाय भी रहती है. नई बहू लक्ष्मी जो कि पानी लाने हैंडपंप गई थी, वापस आते हुए देखती है की अम्माजी दरवाजे पर ही सड़क पर खाना बना रही होती हैं.

यह देखकर वह हैरान हो जाती है. मगर नई बहू बेचारी अम्मा जी से इसका विरोध कैसे कर पाती? वह चुपचाप रह जाती है. यह सब लगातार कई दिनों तक चलता रहता है और लक्ष्मी के मन में प्रतिदिन उथल-पुथल मची रहती है. एक दिन हिम्मत जुटाकर वह अम्माजी से कह ही देती है कि अम्मा जी आप यहां खुले में सड़क पर खाना ना बनाएं, क्योंकि धूल के कण गंदगी एवं कीटाणू खाने में पड़ जाते हैं, जिससे हमारा स्वास्थ्य खराब हो सकता है.

यह सुनकर अम्मा जी लक्ष्मी से कहती हैं, कि कल की आई तो मुझे सिखाती है. मैं यह सब जमाने से करती आयी हूं. यह कहकर वे उसे चुप करा देती हैं. लक्ष्मी बेचारी मन मार कर चुप हो जाती है.

कुछ दिन बाद अचानक बाबूजी को पेट दर्द के कारण अस्पताल में भर्ती कराया जाता है. पेट दर्द का कारण डॉक्टर खराब खाने को बताते हैं और शुध्द एवं ढ़का हुआ

खाना खाने की सलाह देते हैं. तब अम्मा जी को लक्ष्मी की वह सभी बातें याद आती हैं जो वह उस दिन अम्मा जी से खाना बनाते हुए बोल रही थी.

उसके बाद से अम्माजी रसोई घर ही खाना बनाती हैं और उसे ढ़ंककर भी रखती हैं. वे अपनी दोनों बहुओं को भी रसोई घर के अंदर खाना बनाने और उसे ढ़ंककर रखने की सलाह भी देती हैं.

सीख - हमें सदैव शुध्द एवं ढ़ंका हुआ खाना ही खाना चाहिए.

अब नीचे दिये चित्र को देखकर कहानी लिखें और हमें वाट्सएप व्दारा 7000727568 पर अथवा ई-मेल से dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले में प्रकाशित करेंगे.

O Chacha Nehru!

Author - Tikeshwar Sinha Gabdiwala

O Chacha Nehru! O Chacha Nehru!
We need you much in today's testing times

To help this Nation
Build its falling image

We have gone astray
Patriotism runs no more in our veins

Your absence is hurting us so much
Your leadership is needed so much

O Chacha Nehru ! O Chacha Nehru!
We are calling you from your heavenly abode

Where you rest in peace for hereafter

नंदा मैडम की कक्षा - 3

लेखक - सुधीर श्रीवास्तव

अगली सुबह नंदा स्टाफ रूम में बैठी उस दिन की कक्षा के लिए योजना बना रही थी, अचानक पीछे से किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा. उसने चौंक कर पीछे देखा, सुधा और हरप्रीत खड़ी थीं. उसने मुस्कराकर पूछा – “अरे सुधा, हरप्रीत तुम !” आज इतनी जल्दी कैसे आ गईं?

"हाँ बस यूँ ही. कई दिनों से हम दोनों तुमसे बात करना चाह रही थीं. तुम दिन भर व्यस्त रहती हो इसलिए आज हम जल्दी आ गईं." सुधा ने कहा.

"बैठो न. अभी तो क्लास लगने में समय है. कोई ख़ास बात थी?"

सुधा और हरप्रीत दोनों ही नंदा के स्कूल की शिक्षिकाएं हैं. सुधा कक्षा एक और दो को पढ़ाती है. हरप्रीत कक्षा चार की शिक्षिका है. हरप्रीत ने अभी कुछ महीने पहले ही स्कूल ज्वाइन किया है. दोनों ही मेहनती हैं और हमेशा कुछ नया सीखने को लालायित रहती हैं.

" नंदा, पिछले कई दिनों से हम दोनों तुम्हारी कक्षा कोऑब्ज़र्व कर रही हैं. हमारे मन में कुछ सवाल हैं. हम दोनों आपस में उन पर बातें भी कर रही थीं.... लेकिन कुछ बातें अभी भी अनसुलझी हैं, सोचा तुम्हीं से बात करें." सुधा ने कहा.

“भई वाह ! ये तो बड़ी अच्छी बात है कि हम अपनी कक्षाओं के बारे में बात करें. ये एक खूबसूरत पहल है." नंदा ने खुश होते हुए कहा.

“नंदा जी, आप जानती हैं मैंने अभी-अभी ही पढ़ाना शुरू किया है मेरे अनुभव में केवल मेरे बचपन की कक्षाएं हैं. मेरे तरीके वही हैं जो मेरे शिक्षकों के थे. मैं आपकी कक्षाओं को कुछ अलग पाती हूँ. देखती हूँ आपके बच्चे बहुत खुश खुश नज़र आते हैं. उनकी आखों में कोई भय नहीं होता. न तो वे आपसे डरते हैं न ही गणित से. सभी के चेहरों पर एक आनंद और मस्ती का भाव होता है. मैं जानना चाहती हूँ आप ऐसा कैसे करती हैं? हरप्रीत ने बहुत धीरे-धीरे सकुचाते हुए पूछा.

नंदा ने मुस्कराकर हरप्रीत के कंधे पर हाथ रखा और बहुत प्यार से उसकी और देखते हुए कहा- "देखो हरप्रीत, तुम मुझे 'नंदा जी' और 'आप' नहीं कहोगी. ये हमारा स्कूल है, कोई कॉलेज या ऑफिस नहीं और मैं तुम्हारी सीनियर या बॉस नहीं, तुम्हारी दोस्त हूँ. तुम मुझे मेरे नाम से पुकारोगी तो मुझे अच्छा लगेगा. और हाँ, मैं तुम्हे केवल 'प्रीत' कहूँगी, हरप्रीत नहीं. तुम्हें बुरा तो नहीं लगेगा?"

"ओह ! बिलकुल भी नहीं." हरप्रीत ने खुश होकर कहा.

"अच्छा सुधा, तुम क्या पूछना चाह रही थीं?"

"नंदा, मेरा सवाल यह है कि जब बच्चे सीधे-सादे तरीके से गिनती बोल लेते हैं और लिख भी लेते हैं तो उसे इतना पेचीदा बनाने की जरुरत क्या है? दूसरी बात यह है कि तुम गिनने के लिए बच्चों से तरह-तरह की चीज़ें मंगवाती हो. कल जब बच्चे बड़ी संख्याओं पर काम करेंगे, तब भी क्या कंकड़ पत्थर ही गिनते रहेंगे?" सुधा की आवाज में थोड़ी सी तल्ख़ी आ गई थी.

सुधा ने जिस लहजे में यह बात कही उससे नंदा कुछ पलों के लिए चुप हो गई. उसने खुद को संयत किया फिर थोड़ा सोचते हुए कहा - "तुम दोनों के सवाल बहुत महत्वपूर्ण हैं और बहुत जायज़ भी. कोई और भी मेरे इन तरीकों को देखेगा तो शायद उसे भी झल्लाहट और खीझ हो सकती है. शायद उसे गुस्सा भी आये."

सुधा को अपनी गलती का एहसास हो गया था. उसने धीरे से कहा - "नंदा , मुझे माफ़ करना. मैंने गलत तरीके से अपनी बात रखी."

"नहीं सुधा, ऐसा कुछ नहीं है. किसी के लिए भी यह सोचना स्वाभाविक है कि गिनती जैसी चीज के लिए इतना समय क्यों दिया जाना चाहिए. लोगों के पास ऐसा सोचने का आधार भी तो है. प्रायः सभी ने अपने बचपन में बोर्ड पर या किताब में लिखी हुई गिनती को क्रम से बोलकर और दोहरा-दोहरा कर ही तो सीखा है. उनका यह सवाल लाज़िमी है कि उस पर इतना ध्यान क्यों?"

कुछ पलों तक चुप्पी बनी रही. किसी ने कुछ भी नहीं कहा. तीनों सोच रहे थे, शायद कुछ अलग-अलग, शायद कुछ एक जैसा.

इस खामोशी को तोड़ते हुए नंदा ने कहा - "तुम दोनों के सवाल हालाँकि गणित पर ही हैं पर कुछ मायनों में थोड़े से अलग हैं. प्रीत का सवाल कक्षा में काम करने के तरीके को लेकर है जबकि सुधा तुम्हारी बात गणित की अवधारणा पर टिकी है. दोनों ही बातों को किसी शिक्षक के लिए ठीक तरह समझना बहुत जरूरी है."

"मैं कोई विशेषज्ञ नहीं हूँ. मेरी जो समझ बनी है, प्रायः बच्चों के साथ काम करते हुए बनी है. कुछ बचपन के खट्टे-मीठे अनुभवों ने भी सिखाया है. कई बातें प्रशिक्षण कार्यक्रमों में की गई चर्चाओं से स्पष्ट हुई हैं. कुछ ऐसी भी हैं जिन्हें मैंने अलग-अलग किताबों में पढ़ा है. जो कुछ भी पाया उस पर खूब सोचा और उन्हें कक्षा में बार-बार आज़माया. इन सब से कुछ निष्कर्ष मिले हैं परन्तु आज भी मुझे ज़्यादा कारगर तरीकों की तलाश रहती है. मुझे हमेशा यही लगता है की कोई भी तरीका सबसे बढ़िया या अंतिम नहीं है. बच्चों की जरूरतों और उनकी समझ की अनुसार इनमें लगातार बदलाव की जरूरत बनी रहती है.

" हम पहले प्रीत के सवाल को समझने की कोशिश करते हैं. प्रीत ने कहा कि उसके तरीके वही हैं जो उसके शिक्षकों के थे. इस पर मैं इतना ही कहूँगी कि कोई भी तरीका अच्छा, ख़राब, पुराना या नया नहीं होता. महत्वपूर्ण बात यह होती है कि बच्चे सीख पा रहे हैं या नहीं. सीखने में उनकी खुद की भागीदारी हो रही है या नहीं. उनका नया ज्ञान उनके पहले के अनुभवों, जानकारियों और ज्ञान से जुड़ रहा है या नहीं. यह भी देखना जरूरी होता है कि कक्षा में उन्हें सोचने, अपने विचार व्यक्त करने, दूसरे के विचारों को सुनने और नए विचार बनाने के मौके मिल रहे हैं या नहीं. इन सबके अलावा कक्षा का माहौल भी एक ऐसी चीज़ है जो सीखने को बहुत प्रभावित करता है. इसे हम थोड़ा विस्तार से समझते हैं."

"प्रीत, क्या तुम्हें अपने बचपन की कोई ऐसी बात याद है जो स्कूल में गणित सीखने से जुड़ी हो और अच्छी लगती हो?"

यह सवाल सुनते ही हरप्रीत अतीत में जैसे कुछ ढूंढने लगी. उसके चेहरे पर कई तरह के भाव आ जा रहे थे उसने एक गहरी सांस ली और कहा -

“नंदा, मुझे कई बातें याद आ रही हैं... अपनी शरारतें, टीचर की झिड़कियां, उनकी सज़ाएँ, उनका प्यार, उनकी तारीफें... कई बातें."

"क्या कोई ऐसी बात कभी हुई जो तुम्हें आज भी ख़ुशी देती है?" नंदा ने पूछा.

"हाँ नंदा, हमारे एक सर थे. जब भी वो क्लास में आते थे, मुस्कराते हुए आते थे, एकदम जोश और उत्साह से भरे हुए. उन्हें हर बच्चे का नाम याद रहता था. वो सभी को नाम से ही बुलाते थे. गणित के किसी भी सवाल को इतना बढ़िया समझाते थे कि हर बच्चे को लगता था कि वह खुद भी उसे कर सकता है. अक्सर वो सवालों को बोर्ड पर बनाने से पहले हमें खुद बनाने कि लिए कहते थे. एक बार, एक मुश्किल सा सवाल उन्होंने हमें दिया था. उसे कक्षा में केवल मैं हल कर पाई थी. तब उन्होंने मुझे सामने बुलाया, बड़े प्यार से मेरी पीठ थपथपाई, मेरे सिर पर हाथ रखा और मेरी कॉपी पूरी कक्षा को दिखाई. वो पल मुझे आज भी याद हैं और बार-बार उतनी ही ख़ुशी देते हैं जितनी उस दिन कक्षा में मिली थी. यह कहते हुए हरप्रीत का चेहरा ख़ुशी से दमकने लगा था और कहीं उसकी आँख के कोनों में कुछ बूँदें छलक गई थीं."

कुछ पल ऐसे ही बीते. नंदा उन अनुभूतियों को हरप्रीत को जी लेने देना चाहती थी. उसने धीरे से सुधा से पूछा -

"सुधा, यदि किसी ऐसे टीचर की क्लास में तुम होतीं तो तुम्हें कैसा लगता?"

सुधा ने एक गहरी सांस ली और कहा - "बेशक नंदा, मैं भी उन खुशियों को जीवन भर संभाल कर रखती."

“चलो अब एक दूसरी स्थिति की कल्पना करें. प्रीत, क्या तुम्हें कोई ऐसी बात याद है जिससे तुम्हें तकलीफ हुई थी?”

"हाँ, एक बार ऐसा भी हुआ था जब मैं चौथी कक्षा में थी तब हमें एक ऐसे टीचर पढ़ाते थे जो हमें प्यार तो करते थे मगर बहुत चिड़चिड़े थे. उन्हें कब किस बात पर गुस्सा आ जाएगा, कोई नहीं जानता था. वो जब भी क्लास में आते थे तब जैसे सब की जान गले में आकर अटक जाती थी. कक्षा में पिन ड्रॉप साइलेन्स हो जाता था. एक बार उन्होंने हम सबसे कहा कि अपनी-

अपनी किताबें पढ़ो, मन में. मैं सबसे सामने वाली बेंच पर बैठती थी. उस दिन पढ़ते हुए अनायास ही मेरी उंगलियां किताब के कोने पर पन्नों से खेल रही थीं इससे बहुत हलकी सी फर्र-फर्र कि आवाज हो रही थी. मुझे इसका एहसास नहीं था और मैं पढ़ने में मशगूल थी. अचानक उन्होंने कड़कती आवाज़ में कहा- "हरप्रीत सामने आओ.'' मैं सहमी हुई सामने गई. उन्होंने मेरी चोटी पकड़कर जोर से हिलाया, एक तमाचा मेरी गाल पर जमाया और फिर मुझे उठाकर खिड़की से बाहर कर दिया या यूँ कहूँ खिड़की से बाहर फेंक दिया. मुझे हाथ-पैर में चोट तो लगी पर उससे ज्यादा गहरी चोट मेरे मन में लगी. मैं बहुत देर तक वहीँ बैठी रोती रही. न किसी ने मुझे उठाया, न चुप कराया. अपमान और शर्म से कई दिनों तक मैं स्कूल नहीं जा पाई और सच तो यह है कि उसके बाद मैं कभी कक्षा में सहज नहीं हो पाई. हरप्रीत जब यह कह रही थी तब नंदा और सुधा दोनों की कल्पना में कक्षा का वह दृश्य जीवंत हो रहा था. ये बहुत भावुक कर देने वाले पल थे. थोड़ी देर के लिए वहाँ पर एक ख़ामोशी पसर गई. तीनों अनायास ही अपने बचपन की उन यादों में चले गए जहाँ कुछ पीड़ाएँ, कुछ दुःख और कुछ अपमान की स्मृतियाँ छुपी हुई थीं.

नंदा ने तकलीफ से भरी हुई इस खामोशी को तोड़ते हुए कहा- "ये वो क्षण हैं जहाँ हम खड़े हो कर अच्छी तरह महसूस कर सकते हैं कि बच्चों में भी स्वाभिमान का भाव होता है. उन्हें ठेस भी लगती है, और जीवन भर तकलीफ पहुंचाती है. हम, जो उनसे बड़े होते हैं अक्सर इसे नहीं देख पाते, नहीं समझ पाते. हम माता-पिता या शिक्षक के रूप में बच्चों को, एक अधिकारी के रूप में अपने नीचे काम करने वालों को चाहे अनचाहे, जाने अनजाने डांटते हैं, सबके सामने उनकी कमियां निकालते हैं और तारीफ़ तो यह है कि इसे हम अपना हक़ समझते हैं. अक्सर ऐसा कर के खुद को बड़ा महसूस करते हैं. ऐसे लोग बहुत ही कम होते हैं जो अपने से छोटों की गलतियों को देख कर भी उसे महसूस नहीं होने देते और उसे सही रास्ता बता देते हैं. मुझे अपने एक ऐसे प्रोफेसर की हमेशा याद आती है जो अक्सर कहते थे कि किसी को तब पकड़ो जब वो अच्छा काम कर रहा हो. लेकिन ऐसे लोग हमारे बीच बहुत कम होते हैं.''

"प्रीत, तुम्हारे सवाल का जवाब इसी एहसास से जुड़ा हुआ है. जब मैं अपने बच्चों से बात करती हूँ तो चाहती हूँ उनके भीतर उतरकर उन्हें महसूस करूँ. इतना कि वे मुझे अपने सबसे करीब समझने लगें. उन्हें लगने लगे कि वे मुझसे अपनी हर बात कह सकते हैं. हो सकता है कि मेरी ऐसी सोच के लिए मेरा मज़ाक उड़ाया जाए या मुझे पागल कहा जाए."

ये पल बहुत भावुक थे. प्रीत को समझ में आ रहा था कि यही वो बात है जिसके कारण बच्चे नंदा पर जान छिड़कते हैं. सुधा भी एकदम शांत भाव से कुछ सोच रही थी. शायद यह कि किसी शिक्षक के लिए विषय की समझ ही पर्याप्त नहीं है बल्कि एक अच्छा और संवेदनशील इंसान होना पहले जरूरी है.

नंदा ने अपनी बात जारी रखी. उसने कहा - "मुझे नहीं मालूम तुम दोनों मेरे बारे में क्या सोचोगी या लोग क्या कहेंगे. और मैं भी इसकी बहुत चिंता नहीं करती क्योंकि ऐसा सोचने के पीछे कुछ ठोस वहजें भी हैं.''

"वजह? कैसी वजह नंदा?" सुधा ने पूछा.

"दो बाते हैं सुधा. मुझे लगता है कुछ भी सीखना कुछ नयी रचना करने जैसा है. एक सृजन है और कोई भी सृजन दबाव में, डर में, तनाव में, शायद नहीं हो सकता. सर्जना उन्मुक्त है, स्वतंत्र है, नया रास्ता ढूंढने की तरह है. इसके लिए मस्तिष्क और हृदय दोनों को बंधन मुक्त होना होता है.

सृजन की कोई भी प्रक्रिया आनंद देने वाली होती है. सृजन कैसा भी हो, कोई गीतकार गीत लिखता हो, कोई संगीतकार कोई धुन बनाता हो, कोई मूर्तिकार कोई शिल्प रचता हो, कोई बच्चा किसी समस्या का हल ढूंढता हो, हर बात ख़ुशी देने वाली होती है. सृजन की पूर्णता की अनुभूति भी अद्भुत होती है. मुझे लगता है जब परिणीति आनंदपूर्ण है तो शुरुआत भी आनंद से क्यों न हो.

दूसरी बात है हम ईंट, पत्थर और मशीनों के साथ काम नहीं करते हम इंसान के बच्चों के साथ काम करते हैं जो खुद भी पूरी तरह संवेदनशील और समझदार इंसान ही हैं. उनके साथ काम करते हुए यदि दुःख और आनंद दोनों ही पैदा किये जा सकते हैं तो हर बार आनंद के विकल्प को क्यों न चुना जाए?

"वाह, वाह, वाह..." क्या बात है नंदा तुम तो पूरी तरह दार्शनिक बन गई हो. भई, तुम्हारी बात में बहुत दम है."

ये थे एहसान मियां जो इस स्कूल के हेड मास्टर हैं. बड़ी देर से ये इनकी बातें सुन रहे थे. एहसान मियां खुद भी एक बहुत अच्छे शिक्षक हैं. इनकी उम्र 55 से ऊपर है किन्तु अभी भी वे पूरी ऊर्जा और जोश के साथ काम करते हैं.

एहसान मियां को देखते ही तीनों खड़ी हो गयीं. नंदा ने थोड़ा सकुचाते हुए पूछा - "सर आप कब आए ?"

"बस अभी-अभी आया। नंदा, तुम्हारी बातें सुनकर लगता है की बस सुनते ही रहें. भई, मुझे माफ़ करना मैं बीच में ही टपक पड़ा. दरअसल तुम सब से एक सलाह लेना थी. तुम तो जानते ही हो कि स्कूल के रास्ते में कुम्भकारों का मोहल्ला है. कल शाम मैं वहाँ गया था. वो जिस तरह से चाक पर तरह-तरह की चीजें बना रहे थे, मूर्तियों पर रंग लगा रहे थे उससे मैं बड़ा प्रभावित हुआ. मुझे ऐसा लगा कि हमारे बच्चों को यह सब जरूर देखना चाहिए इससे वे समझ पाएंगे कि हम रोज़ कि ज़िन्दगी में जिन चीजों का इस्तेमाल करते हैं उन्हें बनाने के पीछे लोगों की कितनी मेहनत छिपी होती है. इससे बच्चों में अपनी चीज़ों की कद्र करने का सलीका भी पैदा होगा. शायद वे यह भी महसूस कर पाएं कि सोसाइटी या समाज में हम सब कैसे एक दूसरे पर निर्भर हैं. जब यह बात समझ में आएगी तो वे लोगों कि इज़्ज़त करना भी सीख पाएंगे."

"अगर तुम सब ठीक समझो तो मैं सभी बच्चों को अपने साथ वहाँ ले जाना चाहता हूँ."

सुधा ने कहा "सर कितना अच्छा सोच रहे हैं आप, बच्चों को वहाँ जरूर ले जाना चाहिए यदि आप कहें तो हम भी आपके साथ चल सकती हैं."

एहसान मियां ने हँसते हुए कहा- "वाह यह तो बहुत अच्छी बात होगी. तुम सब तैयार हो जाओ हम दस मिनट में यहाँ से निकलेंगे." यह कहकर एहसान मियां अपने कक्ष की ओर चले गए.

नंदा ने कहा "पर सुधा तुम्हारे सवाल का जवाब तो रह गया."

सुधा ने नंदा की ओर देखते हुए कहा "नंदा मैं समझती हूँ कि जिस तरह तुमने प्रीत की बात को इतनी गहराई से हमारे सामने रखा वैसे ही तुम मुझे गिनती के बारे में भी बताओगी. मैं चाहती हूँ कि मैं इसे विस्तार से समझूँ. मुझे अभी केवल इतना बता दो क्या ब्लैकबोर्ड पर लिखी हुई गिनती पढ़ना, गिनती सीखना नहीं है?"

"सुधा यह बताओ जब कोई बच्चा गिनती को पढ़ता है वह क्या करता है?"

सुधा ने सोचते हुए कहा - "वह प्रत्येक संख्या पर ऊँगली रखता हुआ क्रमशः एक दो तीन बोलता हुआ आगे बढ़ता है.

यहाँ दो चीजें होती हैं. बच्चा संख्या का नाम पढ़ रहा होता है और बोर्ड पर लिखी एक विशेष आकृति के साथ उस नाम का सम्बन्ध जोड़ रहा होता है. क्या तुम सहमत हो? " नंदा ने पूछा.

कुछ सोचते हुए सुधा ने कहा - "हाँ शायद ऐसा ही है."

"लेकिन सुधा यह सोचो कि गिनती किस चीज की हो रही होती है?"

सुधा सोचती रही, कुछ कह नहीं पाई. उसके दिमाग में 'संख्या का नाम' और 'एक विशेष आकृति ' ये शब्द प्रश्नचिह्न लिए खड़े हो गए थे. उसने केवल इतना ही कहा "नंदा प्लीज़, मुझे ये बातें ठीक से समझाना. कल हम इत्मिनान से इसपर बातें करेंगे."

नंदा ने 'संख्या का नाम','संख्या की आकृति' के बारे में सुधा और हरप्रीत से क्या बात की, क्या उसने 'संख्या' के बारे में भी कुछ कहा? गिनती सीखने-सिखाने का नंदा का तरीका क्या था? इसके बारे में आप अगले अंक में पढ़ सकेंगे.

आओ स्कूल चलें

लेखक - नेमीचंद साहू

बजती घण्टी ठिन-ठिन

पढ़ो चलो हर दिन-दिन

करो पहले प्रार्थना सभी

फिर गिनती गिन-गिन !

हिन्दी का पाठ पढ़ने और

अक्षर शब्दो की बात करें

अटक-अटक जो पढ़े

उनको सब साथ करें!!

पहाड़े पढ़ो आगे बढ़ो

करो गणित का सवाल

जोड़ घटाना गुणा भाग

और कर दो तुम कमाल !!

जीवों को तुम पहचानो

अवलोकन कर बार-बार

देखो समझो जानो तुम

प्रर्यावरण का समाचार !!

कविता तुम याद करो

ग्रामर का करने ध्यान

चित्र देख मिलान करो

अक्षर से हो जाते पहचान!!

पाठ पढ़ तैयार हो

पीछे का अभ्यास करो

जोडीमिलान सही-गलत

पूरा करो खाली स्थान भरो!!

आओ सब जतन करें

पाठकों का फिर मनन करें

छुट्टी से पहले बच्चों

मिलकर गुरू का नमन करें!!

एक भारत श्रेष्ठ भारत

लेखिका एवं चित्र - श्वेता तिवारी

भारत उनतीस राज्यों का है संगम देश

सबके हैं अलग-अलग परिवेश

संस्कृति-सभ्यता सबसे सुंदर

भाईचारा निराला है

राज्य-राज्य की विविधताओं में भी

आपस में प्रेम हमारा है

भाँति-भाँति के फूल खिले हैं

इनमें खुशबू लिए हुए

भिन्न-भिन्न रंगो से हैं

इंद्रधनुष के रूप लिए हैं

हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई

मिलकर देश बना है

स्वर्णिम इतिहास से भरपूर

भारत देश हमारा है

गुजरात में भी मनती लोहड़ी

पंजाब में भी होली की धूम

अरुणाचल में भी गरबा खेलें

केरल में भी नाचें घूमर घूम

अलग अलग है भाषा बोली

परन्तु एक अपनी पहचान

भारत माँ के लाल सभी हैं

भारत के हम वासी महान

कब आओगे गांधी

लेखक - द्रोणकुमार सार्वा

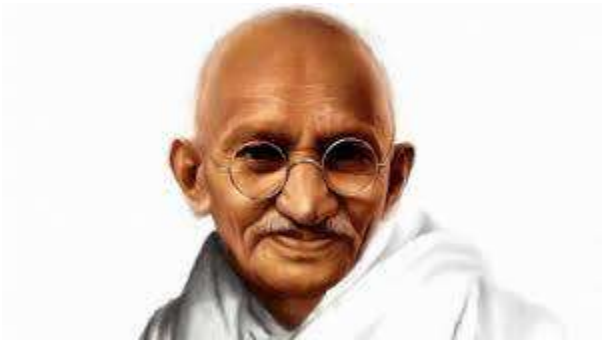

धधक रही है आज समाज मे अनाचार की आँधी
कब आओगे जग के रखवाले पुतली के ओ गाँधी

संयम का पुल टूट चुका है
ढ़ह रहा महल अहिंसा का
बढ़ता जाता भेदभाव
क्या होगा निर्बल इंसा का

तेरे बन्दर ऊंघ रहे है
स्वप्न हुई अब तेरी कहानी
दांडी यात्रा कौन करे
नमक बन गया हैं अब पानी

कब आओगे जग के रखवाले
पुतली के ओ प्यारे गाँधी....

मानवता का सब्र टूटता
सत्य ने फिर हिम्मत हारी है
नहीं दीखता आस-पास भी
कहीं करो या मरो का नारा

चरखों ने अब उम तोड़ा है
खो गए कहीं खादी और सूत
सच की बातें कौन करे अब
100 में नब्बे पूरे झूठ

झूठे में झूठों का शासन
करते सच की हें बर्बादी
कब आओगे जग के रखवाले
पुतली के ओ प्यारे गाँधी...

<u>कलाम कुंडलियाँ</u>

लेखक - डिजेन्द्र कुर्रे कोहिनूर

साधक थे विज्ञान के,

गढ़कर ज्ञान कलाम।

दिया मिसाइल देश को,

तब है उनका नाम।।

तब है उनका नाम,

हिन्द को सब कुछ माना।

बना देश का मान,

जगत ने भी है जाना।।

कह डिजेन्द्र कर जोरि,

नही अब कोई बाधक।

देश किया मजबूत,

नित्य ही बनकर साधक।।

कलाम को सलाम

लेखक - गोपाल कौशल

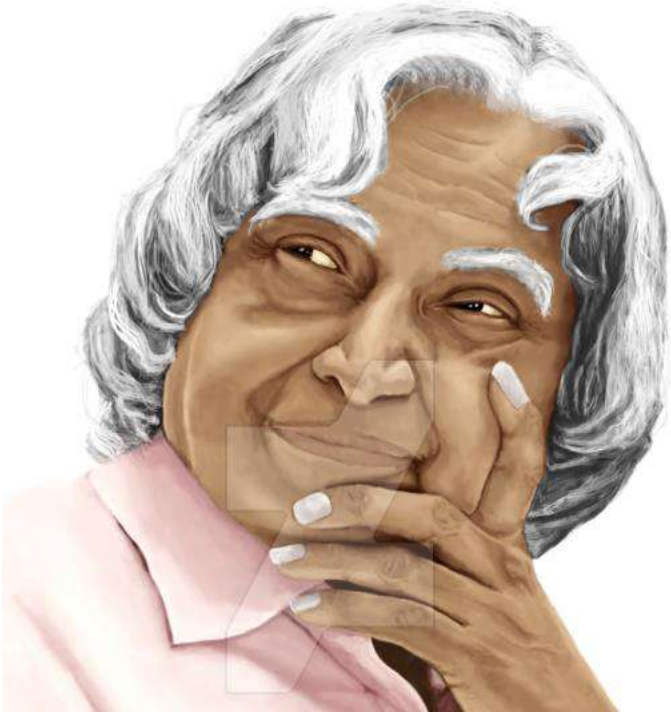

चाचा प्यारे कलाम
तुम्हें हजारों सलाम ।
नवभारत के निर्माता
किया जगत में नाम ।।

अग्नि, आकाश, त्रिशूल
से देश का बढाया मान ।
कभी वैज्ञानिक तो कभी
टीचर बनकर दिया ज्ञान ।।

ज्ञान-विज्ञान के थे पंडित
जन - जन के थे मीत।
राष्ट्र सेवा का संदेश देकर
कहा सद्भाव से बनों रंजीत ।।

किताबें

लेखक –डीजेन्द्र कुर्रे कोहिनूर

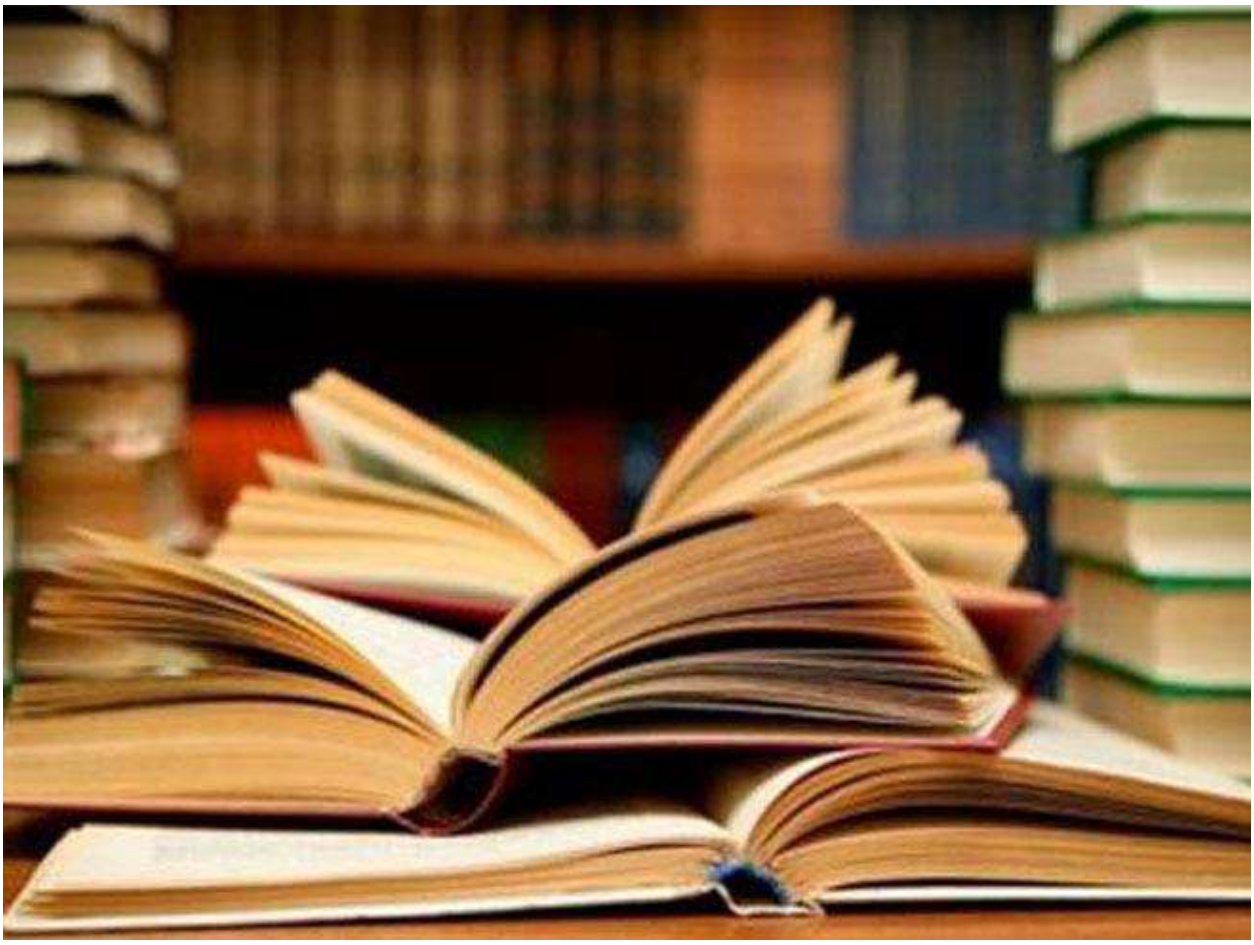

हर जिज्ञासु के मन में पाने की चाह है,

मंजिल तक पहुंचाने की यही एक राह है।

नया करने का इनमे बनता ख़्वाब है,

जिंदगी में सबसे अच्छी दोस्त किताब है।

इसी में कबीर के दोहे एवं संतों की वाणी है,

इसी में अच्छी कविता एवं अच्छी कहानी है।

किताब ज्ञान की वह अनमोल धरोहर है,

जैसे कि जन भरा अथाह सरोवर है ।

सामाजिक जीवन जीना बेहतर सिखाती हैं,

स्वर्णिम भविष्य गढ़ना हमे बतलाती हैं।

विविध संस्कृतियों का अध्ययन हमे कराती हैं,

सर्वधर्म समभाव की शिक्षा हमे बताती हैं।

मन के दुर्गुणों को निकालना सिखाती हैं,

सबसे अच्छी सखा किताबें कहलाती हैं ।

गाँधी शास्त्री का भारत

लेखक - पुनाराम वर्मा

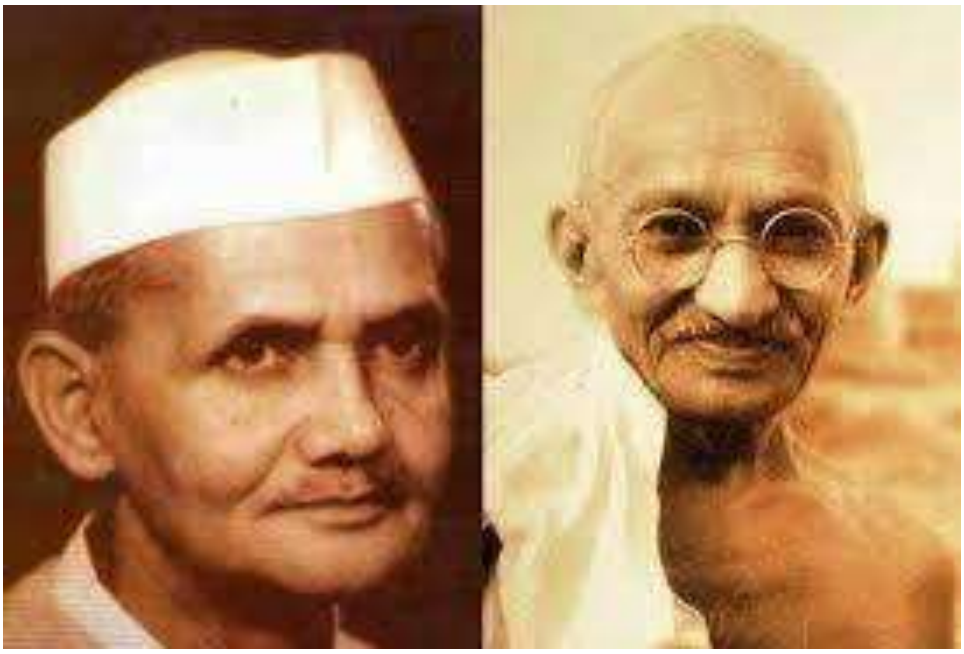

गाँधी,शास्त्री के भारत को

आओ मिलकर पुनः सजाएँ।

रूके नही अब झुकें नही हम

स्वच्छ, सशक्त, गुणवान बनाएँ।।

चलें उसूलों पर उनके ही

सादा जीवन सब अपनाएँ।

सामाजिक समता समरसता के

जन-जन में फिर भाव विकसाएँ।।

उठकर सत्ता की राजनीति से

सात्विक आचार विचार पनपाएँ।

अहं, स्वार्थ को तजकर आओ

मानवता के किरण जगाएँ।।

गुणों का अनुसरण करें

स्वावलम्बन के भाव भरें।

भौतिकता की चकाचौंध तज

स्वदेश हित चाव भरें।

परिवर्तन के दृढ़ संकल्पों से

शान्ति, एकता जश्न मनाएँ।।

रौशन करें राहों को सबके

सीखें जीनें की कलाएँ।

गौरवशाली पूर्वजों के

पदचिन्हों पर शीश झुकाएँ।

युगपुरूषों इन पुण्यपुरूषों को

मिलकर श्रध्दा सुमन चढ़ाएँ।।

गाँधी, शास्त्री के भारत को

आओ मिलकर पुनः सजाएँ।

आओ मिलकर पुनः सजाएँ।।

चींटी रानी

लेखक - भानुप्रताप कुंजाम अंशु

चींटी रानी चींटी रानी
लगती तुम बड़ी सयानी
करती तुम दिन भर काम
करती हो कब आराम ?
नहीं किसी से लड़ती तुम
नहीं किसी से डरती तुम
मुफ्त कि नहीं खाती तुम
मेहनत करना सिखाती तुम
देख तुम्हें होती हैरानी
चींटी रानी चींटी रानी

जाड़ा आया

लेखक - टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला

उछलता कूदता जाड़ा आया
देखो कैसे इतराता जाड़ा आया

रवि की स्वर्णिम किरणे लेकर
धूप सजाता जाड़ा आया

ओस की बूंदें हथेली पे रख
मोती सा बिखराता जाड़ा आया

गरम-गरम खाने-पीने का
लाभ बताता जाड़ा आया

स्वेटर मफलर रजाई की
याद दिलाता जाड़ा आया

छत्तीसगढ़

(राज्योत्सव पर विशेष)

लेखिका - सुनीला फ्रेंकलिन

छत्तीसगढ़ माता है अपनी

हम इसकी सन्तान हैं

धन्य-धान्य से हमको भरती

देती सुरीली तान हैं

हम सब इसके छत्तीस बेटे

अनेकता में एक है

संस्कृति इसकी ही हमको

बनाती इंसान नेक हैं

कण-कण से यह फसलें देती

कटोरा है ये धान का

लाज रखनी है हमको ही

इसके दूध-पान की

सुख-शांति बरसती रहती

इसमें चारों-ओर है

लगता है यहाँ मेले पे मेला

नाचता मन का मोर है

दाई मय सिपाही बनहू

लेखक - लुकेश्वर सिंह ध्रुव

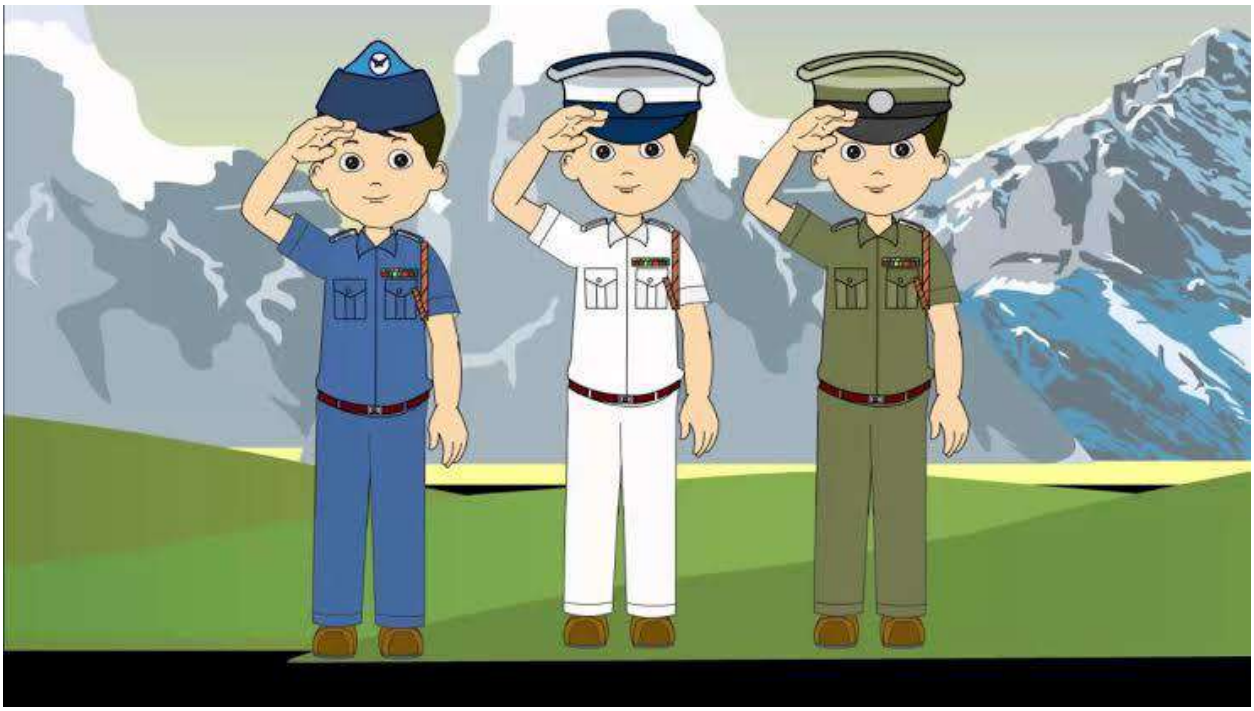

दाई मय सिपाही बनहू

सरहद म जाहू

दुश्मन ल मार भगाहू

दाई मय सिपाही बनहू ।

सच के रद्दा म चलहू

भाई-भाई म मया जगाहू

देश बर जिंहू देश बर मरहू

देश परेम के गीत गाहू

दाई मय सिपाही बनहू ।

चापलूसी ले दूर रहू

न देश के संग गद्दारी करहू

न दुश्मन ल पीठ देखाहू

भारत माता के सच्चा बेटा कहाहू

दाई मय सिपाही बनहू ।।

दिया बन जतेन

लेखक - श्रवण कुमार साहू, प्रखर

चल न संगवारी दीया बन जतेन,

बाती के संगे-संग, जल जतेन।।

गिल्ला-गिल्ला माटी, चाक म चढ़के,

सुग्घर-सुग्घर दीया, बन जतेन।।

आगी म तप के, निखर जतेन।

कुम्हार के भाग, हमू बन जतेन।।

चल न जी, अंधियार डगर ल,

हमू मिल के, अंजोर कर देतेन।।

कभु बनतेन, गरीब के उजियारा

कभु आरती बनतेन, भगवान के।

इही बहाना तो, सेवा कर जातेन।

हम मानवता अउ, सब इंसान के।

दीया के सुख दुःख, दीया ह जाने।

जेन तिल-तिल करके, जलत रहिथे।।

दूसरा के सुख के, खातिर वोहा।

जिनगी म कतेक, दुःख ल सहिथे।

जेन ह अपन, आखिरी साँस ले,

दूसरा ल जीवन, देवत रहिथे।

जेन कभू लेय नइ हे, ये दुनियाँ म।

उल्टा जिनगी भर, सबको दिया है

वोकरेच नाम ह सहिच म,

ये दुनियाँ म दीया हे,,, दीया हे।।

दिव्य गुण धारण करें हम

लेखक - पुनाराम वर्मा

दिव्य गुण धारण करें हम

बगियां के गुलगुल फूल बनें।

सुख की वर्षा करें सभी पर

चलता फिरता स्कूल बनें।।

मंसा,वाचा,कर्मणा जुबां पर

रहे खबरदारी बड़ी।

विकारी मर्यादाएँ भूलें।

मुख में हो मूलहरे जड़ी।।

बाप,शिक्षक सतगुरू पढ़ाते

हम उनके अनुकूल बनें।।

दिव्य गुण धारण करें हम

बगियां के गुलगुल फूल बनें।।

आत्मा समझें खुद को पहले

अवगुणों का त्याग करें।

दुःख न देंगे कभी किसी को

हर दिल में वैराग भरें।।

श्रीमत पर चलते रहें और

माया के सीने की शूल बनें।।

दिव्य गुण धारण करें हम

बगियां के गुलगुल फूल बनें।।

पुरूषार्थ करें उच्च पद खातिर

यह तो विचित्र पढ़ाई है।

आओ अब तकदीर संवारें

ऊँचे स्वर्ग चढ़ाई है।।

सहनशील,मीठे होकर

हम वैतरणी के पुल बनें।

दिव्यगुण धारण करें हम

बगियां के गुलगुल फूल बनें।।

सच्चा गीता ज्ञान सुनाने

त्रिमूर्ति,गोला,झाड़,सीढ़ी हो।

ज्ञान स्मृति में बनी रहे

आने वाले दैव पीढ़ी हो।।

मधुर मुरली सुनाने वाले

कोकिल,कीर,बुलबुल बनें।

दिव्य गुण धारण करें

बगियां के गुलगुल फूल बनें।।

मैं पन को प्रभु में समा दें

सहज,निरंतर याद रहे।

श्वांसों-श्वांस में प्यारे भगवन

बस आपका उन्माद रहे।।

समाधान हों सभी समस्या

आओ ऐसे टूल बनें।

दिव्य गुण धारण करें हम

बगियां के गुलगुल फूल बनें।।

सुख की वर्षा करें सभी पर

चलता फिरता स्कूल बनें।।

दीप जलायें

लेखिका - प्रिया देवांगन "प्रियू"

आओ साथियों दीप जलायें,
मिलकर हम खुशियां मनायें।

दीपक से रौशनी जगायें,
अंधियारे को दूर भगायें।

एक एक दीप जलाकर हम
जग में उजाला लायें।

छोटे बड़े सब मिलकर,
दीवाली का त्योहार मनायें।

मीठे मीठे पकवान बनाकर,
मिल बांट कर हम खायें।

करे शरारत बच्चे मिलकर,
फुलझड़ी घर पर जलायें।

आओ साथियों दीप जलाये,
मिलकर हम खुशियां मनायें।।

दीपमाला

लेखक - योगेश ध्रुव भीम

उजले घर उजले आँगन
घर के व्दारे बाग बगीचे
गाँव गली ये चौराहे में
प्रेम के दीपक जले हुए हैं
दीपों की दीपमाला से

बच्चे बूढ़े हँसते गाते
अंधकार को दूर भगाते
स्नेह के हैं दीप जलाते है
घर व्दार को हैं ये सजाते
दीपो की दीपमाला से

उजले कपड़े पहने सब जन
लक्ष्मी जी का शुभ आगमन
आयीं माता शुभ चरणों से
अन्नकूट धेनु को देते
हलधर जन की सेवा करते
दीपो की दीपमाला से

भर भर मुठ्ठी बंटे बतासे
फुलझड़ी और अनार जलाते
गीत प्रेम से सब हैं गाते
आनंद मंगल की बधाई देते
दीपो की दीपमाला से

राष्ट्र प्रेम के धागों में बंधकर
भाईचारे का संदेश देते
दीपो की उज्ज्वलता लेकर
उत्सव मिलकर सभी मनाते
दीपों की दीपमाला से

दीवाली गीत

लेखक एवं चित्र - त्रिलोकी नाथ ताम्रकार

जगमग -जगमग दीप जल उठे

व्दार-व्दार चमकी दीवाली

स्वच्छता की हैं बात बताते

प्रदूषण से हैं खैर मनाते

गुड्डा-गुड्डी-गीता-गणेश

भेज रहे बधाई संदेश

फेसबुक-व्हाट्सएप वाली

व्दार-व्दार चमकी दीवाली

झालरों से घर को सजाते

व्दार पर रंगोली बनाते

कभी मिठाई की फोटो भेज

घर पर ही खुशियां मनाते

वीडियो देखो टिक-टॉक वाली

व्दार-व्दार चमकी दीवाली

रोशनी की न्याय फुलझड़ी

सर-सर करती घूमी चकरी

चुटपुट-चुटपुट ग्रीन पटाखा

धनतेरस की आई बहार

स्नैपचैट और ट्विटर वाली

व्दार-व्दार चमकी दीवाली

रूप चौदस से सज कर देखो

चौ-पहिए में लक्ष्मी आई

गली-गली गोधन वाली

फोटो भेजो सेल्फी वाली

भाई दूज भी ई-मेल वाली

व्दार-व्दार चमकी दीवाली

जगमग-जगमग दीप जल उठे

व्दार-व्दार चमकी दीवाली

नशा छोड़ो

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

नशा नाश का जड़ है प्यारे, इसको मत अपनाओ ।
स्वस्थ अगर रहना चाहो तो, सादा भोजन खाओ ।।

इज्जत पैसा दोनों होते, एक साथ बर्बादी ।
रोज लड़ाई झगड़ा होते, बनो नहीं तुम आदी ।।

टूटे घर परिवार सभी से, रिश्ते नाते छोड़े ।
ऐसी आदत वालो से अब, काहे रिश्ता जोड़े ।।

खाने को लाले पड़ जाते, बच्चे भूखे सोते ।
जीना मुश्किल हो जाता है, कलप कलप कर रोते ।।

मद्यपान अब करना छोड़ो, सादगी को अपनाओ ।
मिट जायेगा क्लेश कलह सब, घर में खुशियाँ लाओ ।।

<u>पढ़व आज (कज्जल छंद)</u>

लेखिका - चित्रा श्रीवास

सबले पहिली करव काज

शाला जाके पढ़व आज

जिनगी के हे इही राज

करही दाई ददा नाज।।

शिक्षा देवय सदा साथ

बड़का धन हे हमर हाथ

ऊँचा राखय सदा माथ

मनखे बनथे अपन नाथ।।

पावन लगता है

लेखक - अरविंद वैष्णव

भाई बहन का रिश्ता प्यारा

पावन लगता है ।

भाई दूज का पर्व

मनभावन लगता है ।।

बहना से होते सुरभित

घर और आंगन ।

भाई की रक्षा का भाव

यमपाश मिटाना होता है ।।

बहना की मुस्कान से

भाई का मन खिल जाता है।

जाते-जाते दीपोत्सव

अपनापन सिखलाता है ।

कुछ बहनों के भाई

सीमा पर तैनात हैं ।

ऐसे वीर जवानों को

करते हम सलाम हैं ।।

पौधे हैं अनमोल

(विज्ञान कविता)

लेखक - पेशवर यादव

सूरज की किरणों से

खाना बना रहा हूँ

स्वंय खा रहा हूँ

औरो को खिला रहा हूँ

(2)

गति प्रकाश से

प्रकाशानुवर्तन कर रहा हूँ

CO_2 और जल पीकर

कार्बोहाइड्रेट बना रहा हूँ

(३)

प्रांकुर मुलांकुर से,

प्ररोह-रोह बन रहा हूँ

तना जड़ पत्तियों को

जल पिला रहा हूँ

(4)

वाष्प का उत्सर्जन करके

जल चक्र बना रहा हूं

स्वंय सींच रहा हूँ

औरों को पिला रहा हूँ

(५)

सूरज के ताप से

स्वंय तप रहा हूँ

दुनिया के खुशहाली के लिए

ऑक्सीज़न बना रहा हूँ

मय नेहरू बन जातेंव

लेखक - संतोष कुमार साहू "प्रकृति"

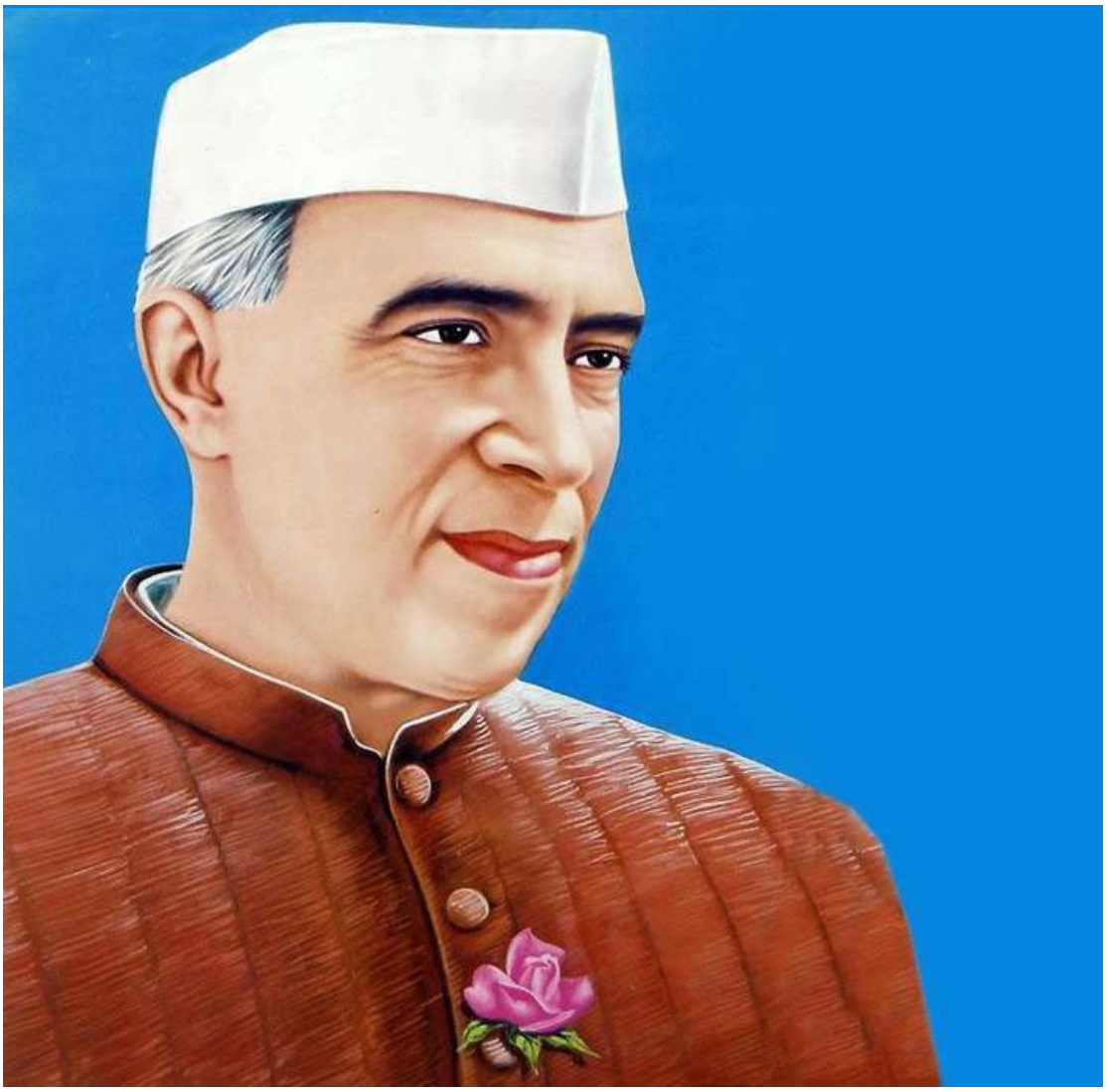

मुखडा-

मय चाचा बन जातेव का जी, मर नेहरू बन जातेव।

पहिन के टोपी अऊ पजामा, गुलाब धरके आंतेव।।

1

जम्मो जगत ल मया करेबर, अपन जीवन ल बितायेंव।

नई रहितीस कोनो खचका डबरा, बरोबर सब ल बनातेंव।

नान्हें लयिका मोर संगवारी, लयिका दिवस मनातेंव।।

2

धरम करम के भेद पाट के, मया के रूख उपजातेंव।

भुंईया के भारे उना करेबर, ज्ञान के जोत जलातेंव।

भारत दाई के बेटा बनके , करजा ल मेहा चुकातेंव।।

3

चंदा सूरूज ल खेलवना बनाके, शनि मा चढके आतेंव।

मंगल बुध अऊ गुरू म जाके, आखर दिया जलातेंव।

अरूण वरूण अऊ यमराजा मा, भौंरा बांटी खेल आतेंव।।

4

नान्हें नान्हें हाथ गोड हे ,सोच ल बडका बनातेंव।

आसमान मा छेदा करके, सिहांसन मय लगातेंव।

ज्ञान गली के रद्दा बनाके, सत मारग ला दिखलातेंव ।।

चाचा नेहरू बच्चों का प्यार देख कर खुद बच्चा बनाने हेतु ओत प्रोत हो जाते हैं और अपने बालपन को याद कर कह उठते हैं -

<u>मय लयिका बन जातेंव</u>

मुखडा-

मय लयिका बन जातेंव का जी, मय लयिका बन जातेंव।

धरके बस्ता अउ कलम ल, ज्ञान के आखर पातेंव।।

1

गुरू बबा के ज्ञान ल पाके ,नाव उपर कर जांतेंव।

दाई ददा के सेवा बजाके, जनम सुफल कर जातेंव।

पढे लिखे बर लयिका बनके, रोजेच स्कुल जातेंव।।

2

भौंरा बांटी खेले ल खेलके ,कम्प्यूटर म मजा उडातेंव।

खो कबड्डी फुगडी खेलके, गणित ल मेहा बनातेंव।

अनार अउ गिनती ल लिखतेंव, गुणा भाग कर आंतेंव।।

3

अंगरेजी बड मजा आथे, विज्ञान म जीव ल बतातेंव।

इतिहास अउ भूगोल पढके, नक्शा झट ले बनातेव।

जीव जनावर रूख अउ राई, परयावरण पढ जातेंव।।

4

गांव गली ल सुघ्घर करतेंव,रद्दा निछमल कर आतेंव।

घर घर म शौचालय होतिस, गांव ल सरग बनातेंव ।

कोनो नई रहितिस लांघन भुखन, मिल बांट के खांतेंव।।

5

दाई ददा के नाव जगाके, भुंइया के नाव जगातेंव।

सते करम ल करके भैय्या, मया के गंगा बोहातेंव।

मेहनत के कमाई ह पूरथे, सब झन बतलातेंव।।

मिट्टी वाले दीये जलाना

लेखिका - शीला गुरूगोस्वामी

राष्ट्रहित का गला घोंट कर

छेद न करना थाली में।

मिट्टी वाले दीये जलाना

अबकी बार दीवाली में।

देश के धन को देश में रखना,

नहीं बहाना नाली में

मिट्टी वाले दीये जलाना

अबकी बार दीवाली में।

बने जो अपनी मिट्टी से,

वो दीये बिकें बाजारों में,

छिपी है वैज्ञानिकता

अपने सभी तीज-त्योहारों में।

चायनीज झालर से आकर्षित

कीट पतंगे आते हैं,

जबकि दीये में जलकर

बरसाती कीड़े मर जाते हैं।

कार्तिक और अमावस वाली,

रात न सबकी काली हो।

दीये बनाने वालों की अब

खुशियों भरी दीवाली हो।

अपने देश का पैसा जाए,

अपने भाई की झोली में।

गया जो पैसा दुश्मन देश,

तो लगेगा राइफल की गोली में।

देश की सीमा रहे सुरक्षित

चूक न हो रखवाली में।

मिट्टी वाले दीये जलाना

अबकी बार दीवाली में।

मिट्ठू अउ मुसला

लेखक - नेमीचंद साहू

लालच म फंसगे सबोझन

सिकारी के जाल म ।

सियान के बात न इ मानय

पड़ जाते जंजाल म ।।

किसने किस्सा मिट्ठू के

फंसगे सबों ह जाल म ।

कतको करिस उदिम फेर

पड़े रहिस जंजाल म ।।

अलगे-अलगे उड़ाय सबों

बुता है चलो सिधय नहीं।

कचरा हो जथे झाड़ू घलो

एके साथ जभे राहय नहीं।।

सुनता ले उडिन सबों

फांदा ह चलो उडागे।

उदिम बनिस ओकरे जेकर

सबों म जोनहा बुढागे।।

उडावत-उडावत सबोझन

मुसवा राहय संगवारी ।

अचरज म पड़गे ओहर

बिपत ल देख भारी ।।

फांदा ल सबों कुतर दिन

मिट्ठू अजादी पाइन ग।

मिल जुरके सबों कोन्हों

सुघ्घर गीत गाइन ग ।।

मैं नन्हा सा हिन्दुस्तान

लेखिका एवं चित्र - मनीषा राघव सिंह

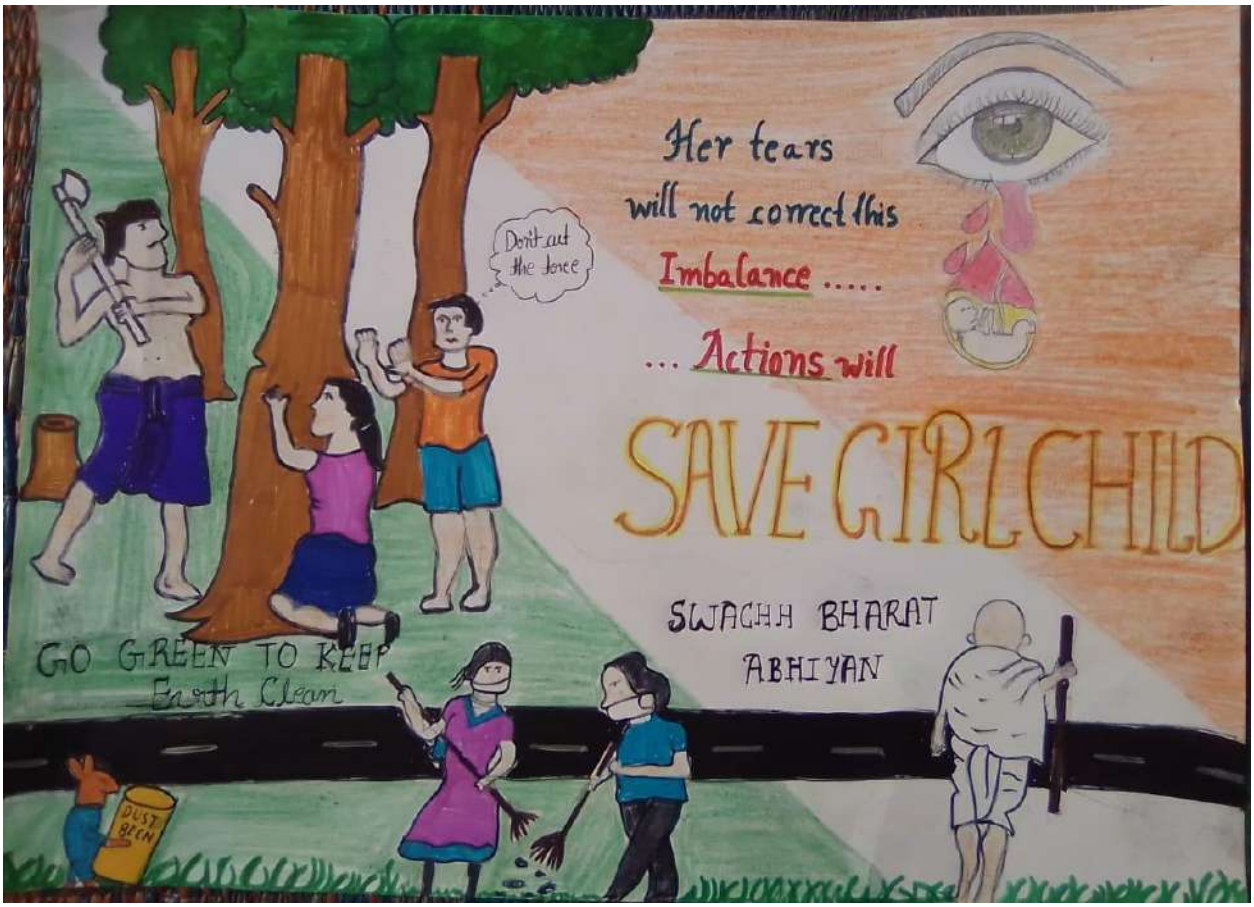

मैं नन्हा सा सहमा सा, हिंदुस्तान हूँ,

पता नहीं की मैं वाकई हिंदुस्तान हूँ?

मैं बचाना चाहता हूँ अपने जंगल को, वृक्षों को

और उन नादान बेटियों को जिनसे मैं डरता हूँ.

मैं बचाना चाहता हूँ अपने जल को, नभ को,

अपनी धरती माँ को अपने आप से,

क्यों कि मैं नादान हिंदुस्तान हूँ

मैं विकास कर रहा हूँ,

लेकिन अपनी नादानी से शायद अपने आप को खोके,

रोके रोके मुझे मेरी नादानियों से

ताकि अपनी आने वाली पीढ़ियों को दे जाऊं

जो मैंने अपने पूर्वजों से पाया था.

मैं सौम्य हूँ, मैं सरल हूँ, मैं हिंदुस्तान हूँ,

न मैं हिन्दू हूँ न मुसलमान हूँ,

मैं सिर्फ हिंदुस्तान हूँ.

बच्चोँ मेरा ख्याल रखो,

पढ़ लिख कर स्वच्छ सुन्दर हिंदुस्तान रचो.

मैं नन्हा सा सहमा सा हिंदुस्तान हूँ,

पता नहीं की मैं वाक़ई हिंदुस्तान हूँ?

यहू घलो नंदावत हावे

लेखक - योगेश ध्रुव भीम

गाँव म नई दिखे
खोर गली म कुँआ
पानी के भरैय्या घलो
नई दिखे पनिहारिन
यहू घलो नंदावत हावे

घर म नई दिखे कभू
मूसर बहाना ढेंकी न
चाउर ल छरैय्या घलो
देखे ल नई मिले न
यहू घलो नांदावत हावे

माटी कुरिया खदर छानी
अउ मोटरा के बोहैय्या न
ढेरा के अटैय्या घलो
छकड़ा गाड़ी ल चलैय्या
यहू घलो नंदावत हावे

नई दिखे गाँव खोर म
गोड़ेला चिरैय्या घलो
टेहर्रा नई दिखे कभू
भाट भटरी अउ मांगैय्या
रहस डंडा के नचैय्या
यहू घलो नंदावत हावे

चुनी रोटी के खवैय्या
पान रोटी ल बनैय्या
भदही पनही के पहनैय्या
मोरा खुमरी के ओढाय्या
ये नवा जमाना आगे न
यहू घलो नंदावत हावे

बखरी बारी म टेरा टेरैय्या
नरवा बाहरा ढोढगी म
चोरिय्या के खेलैय्या घलो
मचान के बनैय्या न
य घलोहू नंदावत हावे

लीला नाटक के करैय्या
गड़वा बाजा ल बजैय्या
पंडवानी ल गवैय्या
यहू घलो नंदावत हावे

गली खोर म नइ दिखे
चिखला घलो अउ माटी
होगे यहू ह पक्की
भूईय्या कहाँ ले
सोखही घलो पानी

अब होगे हे करलाई
य घलोहू नंदावत हावे
ये नवा जमाना आगे भीम
ये नवा जमाना आगे

वृक्ष

लेखिका - सुनीला फ्रेंकलिन

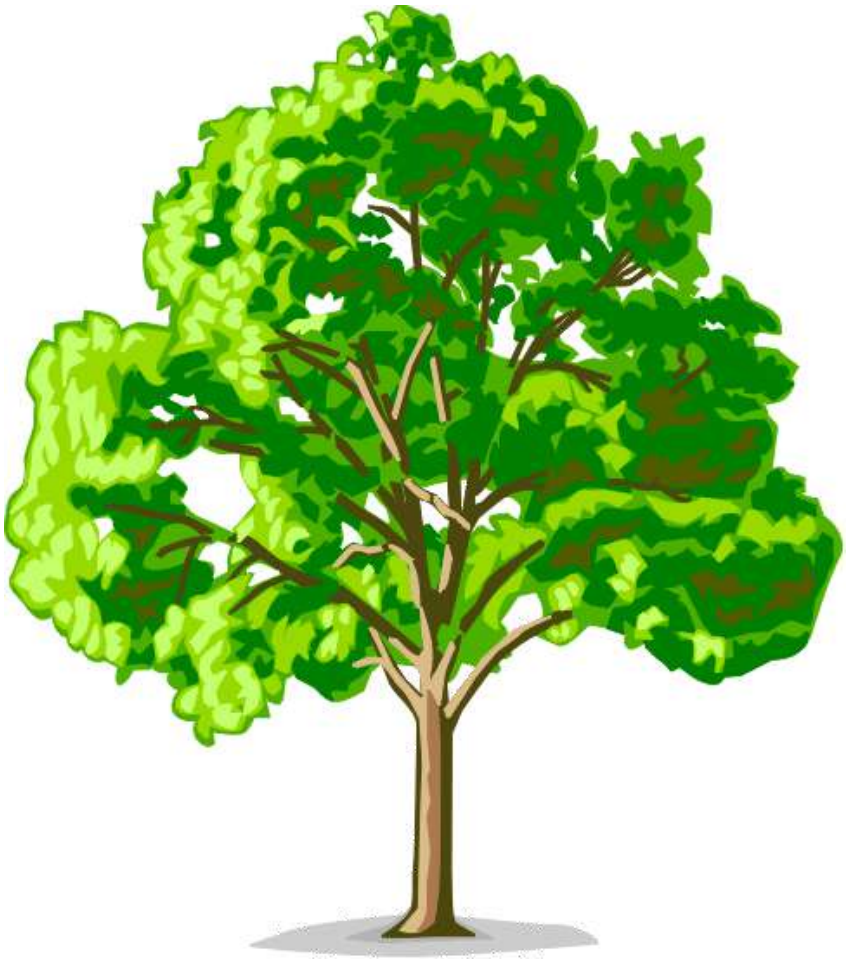

ऊँचे-ऊँचे ये वृक्ष विशाल,

मोटा तना है मोटी डाल।

दूर दूर तक बाँहें फैलाये,

खेत खलिहानों में है छाये।

लहराते है ये झूम-झूम कर,

गीत गाते ये घूम-घूम कर।

जहाँ देखो ये वही खड़े हैं,

अटल-अजेय से वही अड़े है।

है हरे-भरे नयनाभिरामी,

सदा विजय की ये भरते हामी।

इन पर बैठ कर चिड़िया गाती,

और ताल देती हैं इनकी पाती।

बादलों को ये आकर्षित करते,

वर्षा देकर हमको हर्षित करते।

प्राणप्रद वायु भी ये देते हैं,

फिर भी दाम हमसे नहीं लेते है।

पर्यावरण है इनके दम पर,

प्रेम ये हमसे करते जम कर।

फिर भी इन्हें हम नुकसान पहुँचाते,

जान-सुनकर भी हम कष्ट उठाते।

अब कुछ तो हमको करना होगा,

वरना किए का फल भरना होगा।

आओ मिलकर हम ये काम करें,

वृक्षारोपण कर हम अपना नाम करें।

शरद पुन्नी

लेखक - योगेश ध्रुव भीम

पुन्नी के चँदा न, अंजोर बगराये हावे |
अगासे भूईय्या म, ठिठोली करत न ||

अमरीत बरसावत, खोखम के फुले म |
तरिया अउ नरव के, पानी म छिछले हावे ||

घर के दुवारी अउ, कुरिया के छानी म |
बखरी बियारा म, हाँसत गावत हावे ||

बबा के माची अउ, लईका के थारी म |
शरद के चँदा ह, अंजोरी बगराये हावे ||

गोले तोर चेहरा अउ, रुपे तोर सुघ्घर न |
मन ल रिझाये तय, पगला बनाये हावस ||

केंवट के डोंगी अउ, रूखवा के फुनगी म ।
शरद के चँदा तय, मोती कस दमकत न ॥

लईका सियाने के, मन ल तय मोहडारे ।
तोरे अंजोरी ये, सब ल घलो रिझाये न ॥

नदियां समुंदर म, छिछले अंजोरी कस ।
शरद के चँदा घलो, अमरीत पियाये तय ॥

मूरझाये तन ल तय, हरियाये मन ल न ।
तोरे अंजोरी घलो, निक मोल लागे हाबे ॥

दूध भाते कटोरा ह, छानी म रखाय हावे ।
शरद के चँदा तय, अमरीत ल बरसादे न ॥

मोर गाँव के गली म, लईका गोहारे परात घलो ।
शरद के अंजोरी तोला, भीम ह बुलावत हावे ॥

हइय्या रे हइय्या

लेखक - टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला

हइय्या... रे...हइय्या...

चलव...रे...भइय्या...

सुघर डगर

गाँव डहर

जाबोंन रे भइय्या...हइय्या रे...

आमा अमराई

डोलय रुखराई

झूलबोंन रे भइय्या... हइय्या रे...

कोइली गाही

बेंदरा मटकाही

जीभराबोंन रे भइय्या...हइय्या रे...

दाई खिसियाही

अबड़ हाँसी आही

हा...हा...हा...

जादूगर

लेखक - भानुप्रताप कुंजाम अंशु

गाँव में आया जादूगर
खेल दिखलाया जादूगर
पकड़ छड़ी उसने घुमाया
झट से पैसा उसने बनाया
उसने जादू खूब दिखाएँ
हमने ताली खूब बजाएँ
मन में आया एक सवाल
पहुँच जाऊँ नैनीताल
मन की बातें जा खोला
जादूगर से जा बोला
हँसकर बोले जादूगर
सुन मेरे बाजीगर

सब हाथों की सफाई है
नहीं इसमें सच्चाई है
मैं वह बेचारा हूँ
हालात के आगे हारा हूँ
जादू मैं दिखाता हूँ
सब को रोज़ हँसाता हूँ

पहेलियां

प्रस्तुतकर्ता - टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला

1. ओछी सोच रखना मत
   हम भी बड़े भले जी
   काँटे-खीले से तुम्हें बचाते
   रहते पाँव तले जी

2. एक दक्षिण भाषा है बच्चों
   उल्टा-सीधा एक समान
   तीन अक्षरों का शब्द वह
   बताये, वो विव्दान

3. नर्म शरीर रोयेंदार वाला,
   है वह एक जानवर
   होती टांगें छोटी-छोटी
   चले उछल-उछल कर

4. आन-शान से भरी होती
   युध्द के मैदान में
   जूझती रहती चम-चम
   हार-जीत के इम्तिहान में

5. एक लाल गोल अंगारा
   दिन का बढ़ता पारा
   रोज दिखाता जग सारा
   कहलाता वह एक तारा

उत्तर :- 1. जूते-चप्पल. 2. मलयालम. 3. खरगोश. 4. तलवार. 5. सूरज.

<u>नवाचार - पेपर बैग</u>

प्रस्तुतकर्ता एवं चित्र - अशोक कुमार राठिया सहायक शिक्षक प्रा.शा.डोंगदरहा,जिला कोरबा

प्राथमिक शाला डोंगदरहा के शिक्षक श्री अशोक कुमार राठिया के व्दारा स्कूल के बच्चों को पेपर बैग बनाना सिखाया गया है. पर्यावरण बचाना है, पेपर बैग अपनाना है के उद्देश्य से सभी बच्चों, पालकों, शिक्षकों व्दारा पेपर बैग का उपयोग करने का संकल्प लिया गया है एवं बच्चों के माध्यम से पालकों को भी पेपर बैग बनाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है जिससे वे स्वयं बैग बनाकर उपयोग करेंगे.

<u>नवाचार - बचत बैंक</u>

प्रस्तुतकर्ता एवं चित्र - विभा सोनी

ग्रामीण परिवेश में रहने वाले बच्चे बैंक की जानकारी के मामले में अनभिज्ञ होते हैं. उन्हे पैसे का सही उपयोग पता नहीं होता है. इसलिए मैंने अपनी शाला में पुट्ठों को काटकर एक बॉक्स का निर्माण किया. शाला में जाकर बच्चों को उस बॉक्स को दिखाया. इसके बाद मैंने बच्चों को बताया कि हर दिन जब हमारे माता-पिता हमें

खाने आदि के लिए कुछ पैसे देते हैं तब उनमे से कुछ पैसे हम अपने बचत बॉक्स में डाल दें. धीरे-धीरे करके इसमें पैसे इकट्ठे हो जायेंगे जो हमें सही समय पर काम आयेंगे. एक ही दिन में मेरी शाला के कुछ बच्चों के द्वारा जमा करने पर 161 रूपये जमा हुये. इस तरह बच्चों ने बचत बैंक को जाना और समझा बचत बैंक पैसा जमा करने की एक बहुत ही अच्छी विधि है. मुश्किल समय में पैसा ही काम आता है. स्वयं और समाज के हित में वित्तीय जागरूकता ज़रूरी है. बचत बैंक के माध्यम से बच्चों में उत्तरदायित्व की भावना का विकास हुआ है.

<u>नवाचार - लर्निंग छत</u>

आलेख एवं चित्र - निरंजन लाल पटेल प्राथमिक शाला लामीखार

उद्देश्य:- लर्निंग छत के माध्यम से बच्चों कि चित्रकारी, कहानियों, कविताओं को एक रस्सी के माध्यम से लटकाना ताकि सभी बच्चे एक दूसरे की कविता एवं कहानी को देख सकें.

आवश्यक सामग्री:- पुराना कार्टून, चार्ट पेपर, कलरपेन, रस्सी एवं प्रकाशन हेतु स्कूल की छत.

क्रियान्वयन:- लर्निंग छत के प्रभारी शिक्षक निरंजन लाल पटेल व्दारा छात्रों से प्राप्त कविताओं एवं कहानियों को छत पर रस्सी के माध्यम से लटकाया गया ताकि सभी बच्चे आसानी से देख सकें.

लाभ:-

(1) लर्निंग छत बच्चों को अपनी और आकषिर्त करती है.
(2) बच्चे एक दूसरे की रचना को आसानी से देख पाते हैं.
(3) इससे बच्चों का व्यक्तित्व निचार रहा है और उनकी जिज्ञासा और भावनाएँ सामने आने लगी हैं.
(4) लर्निंग छत पर बच्चों केी हस्तकला को भी स्थान दिया गया है.

मेरा अनुभव:- बच्चे कबाड़ से जुगाड़ करके उनके व्दारा बनाई गयी हस्तकला को लर्निंग छत पर लटकता देखकर बहुत आनंदित होते हैं. इससे स्कूल की सुन्दरता मे भी निखार आता है और इससे बच्चों की प्रतिभा भी निखरती है.

चुटकुले

पति और पत्नी शॉपिंग लिस्ट बना रहे थे.

पत्नीः सबसे पहले क्या लेना है?

पतिः लिखो, सबसे पहले कर्ज लेना है.

किसी के हिस्से में बोनस आया,किसी के हिस्से मिठाई आई.....

मैं एक बेरोजगार था. मेरे हिस्से में **घर की सफाई आई.**

पप्पूः सुना है तुम्हारा मोबाइल चोरी हो गया.

गप्पूः परेशान मन से बोला हां दोस्त.

पप्पूः तो उसका चार्जर मुझे दे दो.

पप्पू: पापा स्कूल में **एक छोटा सा गेट टूगेदर है.**

पापा: छोटा सा मतलब? पप्पू (रोते हुए): मतलब आप, **मैं और टीचर.**

आंटीः शादी हो गई तुम्हारी? **लड़कीः** जी आंटी.

आंटीः लड़का क्या करता है? **लड़कीः** अफसोस करता है.

<u>विज्ञान के खेल - गैसों में प्रसार</u>

लेखिका - अनामिका पाण्डेय

सामग्री - एक गुब्बारा, एक खाली बोतल, एक बर्तन में गर्म पानी.

गतिविधि - बोतल के मुंह पर गुब्बारा बांध दें. इसके बाद इसे गर्म पानी के बर्तन में रखें. कुछ देर में बोतल के अंदर हवा गर्म होकर फैलने लगती है और गुब्बारा फूल जाता है. अब बोतल को ठंडे पानी में रखें. गुब्बारा फिर से पिचक जाता है.

लाभ - बच्चे सरलता से गर्मी के कारण गैसों में प्रसार के बारे में समझ जाते हैं.

भाखा जनउला

प्रस्तुतकर्ता - दीवक कंवर

1 ड		र		2 मं	3	री	हा		4 त
न्डा			5 कुं	6	रु		7 ल	8	री
9	चु	10 आ			11 हा		य		
च		13	14 छी						
					15 दा		16 म		17 त
गा		18 भा		19 द		री	या		री
	20		वा				21	22 ख	
23 दा				24 मी	25 ता			26	हां
	न		27 बो				28 डा	र	
	29 खे	ख			30 ज			31 खा	ल्हे

बाएँ से दाएँ - 1. रास्ता, 2. माँदर वाद्य बजाने वाला, 5. एक सब्जी का नाम, 7. झूठ, 9. कंकड़ का खेल, 11. हाँ है, 13. मक्खी, 17. बीच, 16. बीच, 19. लोकगीत, 20. शराबी, 21. पेड़, 23. माता, 24. मित्र, 26. यहाँ, 28. डाल, 29. सियार, 30. जड़ी, 31. नीचे

ऊपर से नीचे - 1. पेड़ मे खेला जाने वाला खेल, 2. शराब, 3. शराबी, 4. तालाब, 10. आम, 14. सीताफल, 15. त्वचारोग, 16. प्रेमी, 17. नीचे, तल, 20. आदमी, 22. पशुओं का झुंड, 25. गले मे पहनने वाला, 27. नाभि

उत्तर

1 ड	ह	र		2 मं	3 द	री	हा		4 त
न्डा			5 कुं	6 द	रु		7 ल	8 बा	री
9 प	चु	10 आ			11 हा	व	य		या
च		13 मा	14 छी						
रं			ता		15 दा		16 म	झो	17 त
गा		18 भा		19 द	द	री	या		री
	20 म	त	वा	र			21 रु	22 ख	
23 दा	ई			24 मी	25 ता	न		26 इ	हां
	न		27 बो		बी		28 डा	र	
	29 खे	ख	रीं		30 ज	री		31 खा	ल्हे